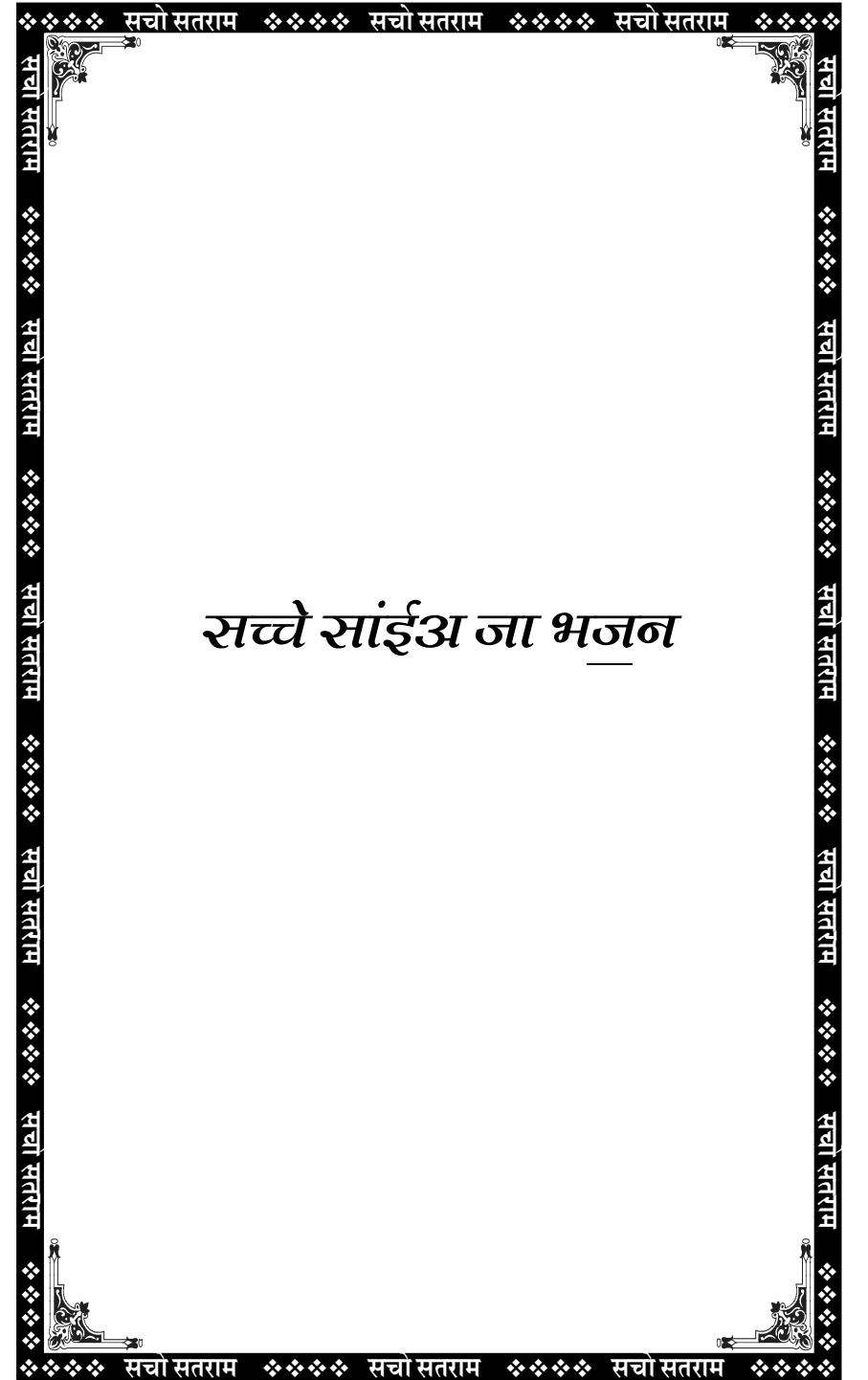
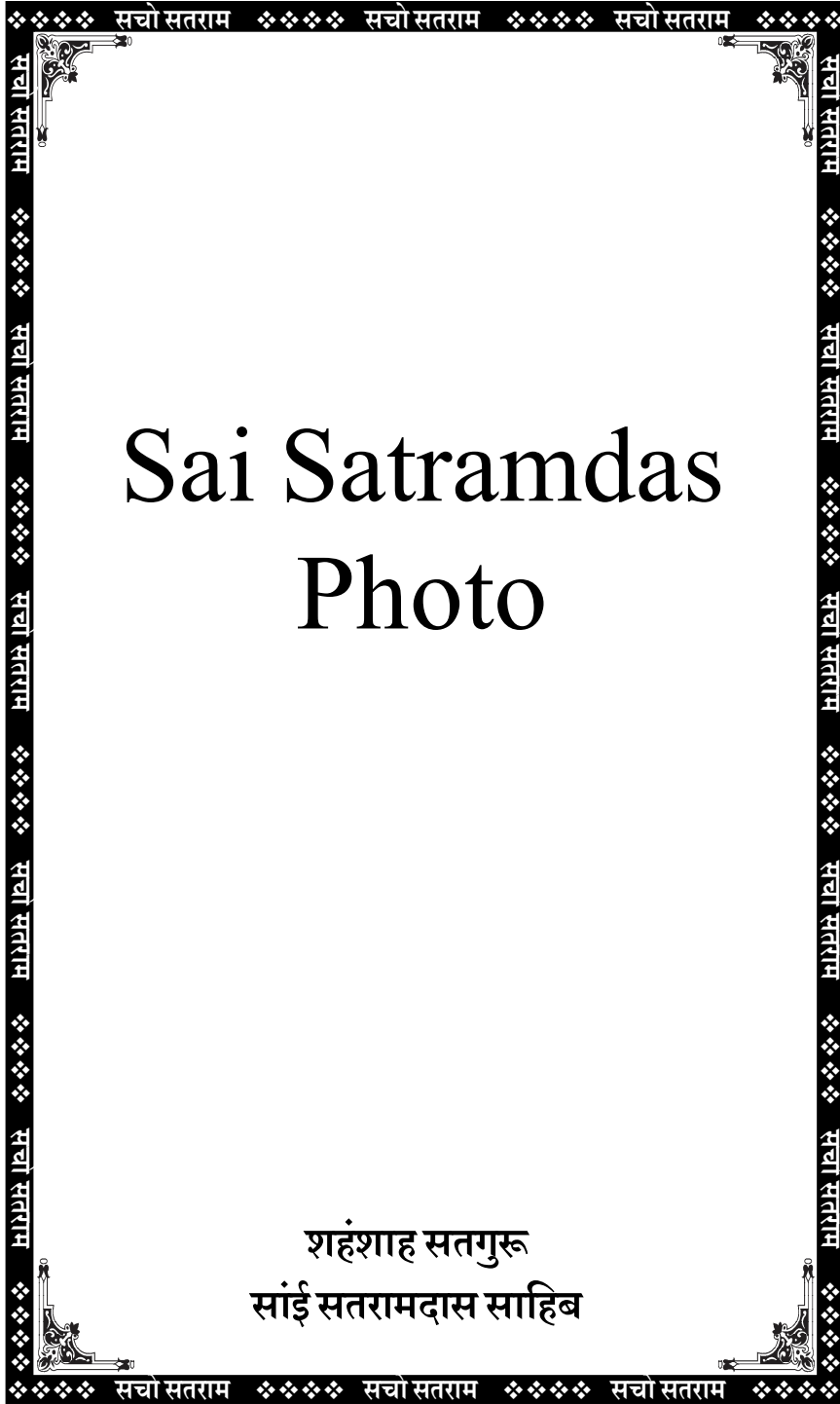


| सचो सतराम | सचो सतराम | सचो सतराम | सचो सतराम |
|----------------------------|-----------|--------------------------|-----------|
| न. भजन | सुफिहो | नं. भजन | सुफिहो |
| ४१. हिक आसरो आ | 59 | ६४. कंदो आ कंदो आ | 82 |
| ४२. सतगुरु मेरे सतगुरु | 60 | ६५. गोद पंहिंजी तूं डे | 83 |
| ४३. रग - रग में मुंहिंजी | 61 | ६६. सांई विस्पत जी रात | 84 |
| ४४. तुंहिंजी याद सताए | 62 | ६७. हले थी शेवा | 85 |
| ४५. रहेड़ीकअ जे नंढे | 63 | ६८. बादशाह आहे | 86 |
| ४६. वारी वारी वजां पंहिंजे | 64 | ६९. सांई सतराम | 88 |
| ४७. दिल चाहे दिल चाहे | 65 | ७०. पार कंदे सतराम | 89 |
| ४८. मेरी जिंदगी का | 66 | ७१. असां छो न | 91 |
| ४९. रहेड़की वाले मुझे | 67 | ७२. हिन रहेड़कीअ में | 92 |
| ५०. कीअं प्रीतम खे | 68 | ७३. हिक नानो राजी हुजे | 93 |
| ५१. वसे रहेड़कीअ में राणो | 69 | ७४. बिज पोख्यो सांई | 94 |
| ५२. चल मलंगा चल | 70 | ७५. सारे जग में तुंहिंजी | 95 |
| ५३. मैं सच्चे सांई दे लड़ | 71 | ७६. भागावालीयों | 97 |
| ५४. ज़िन्दगी गुज़ारियां | 72 | ७७. रहेड़कीअ में अचणवारा | 98 |
| ५५. घुरां महेर तोखां मां | 73 | ७८. तो दर अरदास | 99 |
| ५६. मुंहिंजा सतगुरु | 74 | ७९. जब कोई नहीं आता | 100 |
| ५७. मेरी झोपड़ी के भाग | 75 | ८०. हरी शरणम, शरणम | 101 |
| ५८. अव्हांजा प्रेमी | 76 | ८१. सांई मुंहिंजी पत | 102 |
| ५९. आहे कबुली तुंहिंजी | 77 | ८२. राम नाम बोलो | 103 |
| ६०. सबखे बुधायां | 78 | ८३. राजी आ नानो | 104 |
| ६१. भोग साहेब पियो आ | 79 | ८४. मिलियो जनम | 105 |
| ६२. दुःख में न घबराना | 80 | ८५. न नाम थो जर्पी | 106 |
| ६३. तुंहिंजो मेलो बुधी | 81 | ८६. बणियो तीर्थधाम | 108 |
| | | ८७. सबसे सुंदर गहरा | 109 |

| सचो सतराम | सचो सतराम | सचो सतराम | सचो सतराम |
|--------------------------------|-----------|---------------------------|-----------|
| न. भजन | सुफिहो | नं. भजन | सुफिहो |
| सांई कंवरराम, सांई कन्हैयालाल, | 110 | १२. करते है दाता तेरा | 135 |
| सांई साधराम जा भजन | | १३. देना है तो दीजिए | 136 |
| १. माफ मंदायूं | 111 | १४. कीअं गुण गायां | 137 |
| २. हवाऊंनि में | 112 | १५. पन पन थी वयुस | 138 |
| ३. कुहर बि अघजी विया | 113 | १६. तेरे अहिसान का | 139 |
| ४. आऊ सतगुरु | 114 | १७. कितने अच्छे भाग्य | 140 |
| ५. थींदो केर कंवर | 115 | १८. निशकामता जीवन में | 141 |
| ६. मस्त दुल्हो सखावत | 116 | १९. रहिणी ऊंची णिए | 142 |
| ७. लाल सखी लजपाल | 117 | २०. गुरु संवारे छडे थो | 143 |
| ८. नाने जी आरती | 118 | २१. विश्वास हुजे ऐं कम | 144 |
| ९. करे अमिरी वयो त | 119 | २२. सुखमनी सुखन जो | 145 |
| १०. अजु आयो सांई | 120 | २३. गुरु अहिसान लख | 146 |
| ११. डिस सुहिणो | 121 | २४. बरसा सतगुरु सुख | 147 |
| भजन | 122 | २५. ऐ सतगुरु ऐ मेरे | 148 |
| १. गुरु तेरा राखा | 123 | २६. मेरे हाथों की लकीरों | 149 |
| २. मुझे तूने मालिक | 124 | २७. कयां प्रार्थना | 151 |
| ३. बाबा नानक दुखीयां | 125 | २८. शुकर करां, गुरुजी | 152 |
| ४. तेरे दरबार की | 126 | २९. जेको सोचे छडियो | 155 |
| ५. गुरु मेरी पूजा | 127 | ३०. मुंहिंजे बचड़नि ते | 157 |
| ६. सुहिणा रस्ता पिया | 128 | ३१. सतगरू मैं तेरी पतंग | 158 |
| ७. शुक्र करां मेरे दाता | 129 | ३२. नाम जपणो जे न हो | 159 |
| ८. मेरे घर के आगे | 131 | ३३. पूरा ध्यान लगा | 160 |
| ९. सच्चा सतगुरु कयो | 132 | ३४. मुंहिंजा मालिक तूं कर | 161 |
| १०. तौबा कर मालिक दर | 133 | आरती | 162 |
| ११. आया हो आया | 134 | अरदास साहिब | 164 |



सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सुखद मंत्र

हरि शरणम् - हरि शरणम्
 ॐ शरणम् - ओंकार शरणम्
 सत शरणम् - राम शरणम्
 सतराम शरणम् - सतराम शरणम्
 शिव शरणम् - शक्ती शरणम्
 गोविंद शरणम् - गोपाल शरणम्
 सतराम शरणम् - सतराम शरणम्

ॐ मंगल चरण

वार वार वंदन कयां, सच्चो सतराम सतगुरु पूज।
 जंहिंजी महिर मया सां, मिले अनुभव आतम् सूझ।
 रोज ध्यायां नाम तंहिंजो, जेको आहे चेतन चित् रूप
 अंदर बाहर हिकु वसे, सतगुरु ज्ञानसरूप
 पूरण आहे सतगुरु असांजो, जीअं राम कृष्णानन्द
 जंहिंजी महिर मया सां, मिलयो पूरण परमानन्द
 जंहिंजी अपार कृपा सां, पायो सच्चो सचिदानन्द
 सच्चो सतराम ध्याए सदा सुख पाए

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

राम चओ, राम चओ सच्चो सतराम
 सच्चो सतराम चओ सच्चो सतराम
 इहो घोट खोताराम अथव, सच्चो सतराम
 इहो सभ सुखन जो धाम अथव, सच्चो सतराम
 कन्दो मुश्किल आसान अथव, सच्चो सतराम
 जंहिंजो ऊचो ऊचो शान अथव, सच्चो सतराम
 ईहो रहड़की वारो राम अथव, सच्चो सतराम
 जंहिंजी दुनियाँ गुलाम अथव, सच्चो सतराम
 डोंदो सच जो पैगाम अथव, सच्चो सतराम
 सच्चो सतराम चओ सच्चो सतराम

इहो निमाणन जो माण अथव, सच्चो सतराम
 इहो बेवाहन जी वाह अथव, सच्चो सतराम
 इहो हीणन जो हमराह अथव, सच्चो सतराम
 इहो अड़ियन जो आधार अथव, सच्चो सतराम
 इहो कन्दो बेड़ा पार अथव, सच्चो सतराम
 इहो दानी दातार अथव, सच्चो सतराम
 इहो ईश्वर जो अवतार अथव, सच्चो सतराम
 सच्चो सतराम चओ सच्चो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

सचो सतराम

इहो पर उपकारी अथव, सचो सतराम
 इहो कृष्ण मुरारी अथव, सचो सतराम
 इहो ब्रिज बिहारी अथव, सचो सतराम
 इहो मोहन मुरारी अथव, सचो सतराम
 जेको ईन्दो हिकवारी अथव, सचो सतराम
 जंहिजे दर्शन सां बहारी अथव, सचो सतराम
 मिटाईदो मन जी मूँझारी अथव, सचो सतराम
 सचो सतराम चओ सचो सतराम

सचो सतराम

इहो टुट्रल गंढीदो अथव, सचो सतराम
 पंहिंजी चादर में ढकींदो अथव, सचो सतराम
 इहो सचन खे आणींदो अथव, सचो सतराम
 इहो कूड़ न सहंदो अथव, सचो सतराम
 इहो पत्थर बि गारींदो अथव, सचो सतराम
 इहो कंकर न सहंदो अथव, सचो सतराम
 इहो भाग वेही ठाहींदो अथव, सचो सतराम
 सचो सतराम चओ सचो सतराम

सचो सतराम

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

सचो सतराम

इहो घोटन जो घोट अथव, सचो सतराम
 इहो लालन जो लाल अथव, सचो सतराम
 इहो नंगी नंगपाल अथव, सचो सतराम
 इहो कन्दो मालामाल अथव, सचो सतराम
 इहो सखी लजपाल अथव, सचो सतराम
 इहो गुलन गुलजार अथव, सचो सतराम
 इहो सभ जो आधार अथव, सचो सतराम
 सचो सतराम चओ सचो सतराम

सचो सतराम

इहो पीली पगड़ी वारो अथव, सचो सतराम
 इहो गाड़हे चोले वारो अथव, सचो सतराम
 इहो छेर जामे वारो अथव, सचो सतराम
 इहो सभजो सहारो अथव, सचो सतराम
 इहो चौदही जो चिमकारो अथव, सचो सतराम
 जंहिंजो हिन्द - सिन्ध में नारो अथव, सचो सतराम
 हिते ईंदो भागन वारो अथव, सचो सतराम
 सचो सतराम चओ सचो सतराम

सचो सतराम

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

सचो सतराम

इहो नूरानी नूर अथव, सच्चो सतराम
 इहो हाजरां हजूर अथव, सच्चो सतराम
 इहो जाहिरां जहूर अथव, सच्चो सतराम
 सारी दुनिया में मशहूर अथव, सच्चो सतराम
 कन्दो कष्ट काफूर अथव, सच्चो सतराम
 कन्दो अवली मां सवली अथव, सच्चो सतराम
 इहो देवरी वारो राम अथव, सच्चो सतराम
 सच्चो सतराम चओ सच्चो सतराम

इहो राजन जो राजा अथव, सच्चो सतराम
 कन्दो दुखड़न खां आजा अथव, सच्चो सतराम
 इहो जाथे काथे हाजुर अथव, सच्चो सतराम
 इहो सदाई गदु अथव, सच्चो सतराम
 इहो डींदो सद्दु में सद्दु अथव, सच्चो सतराम
 जेको पल पल पुकारींदो अथव, सच्चो सतराम
 दुख्यो डींहं न देखारींदो अथव, सच्चो सतराम
 सच्चो सतराम चओ सच्चो सतराम

सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

सचो सतराम

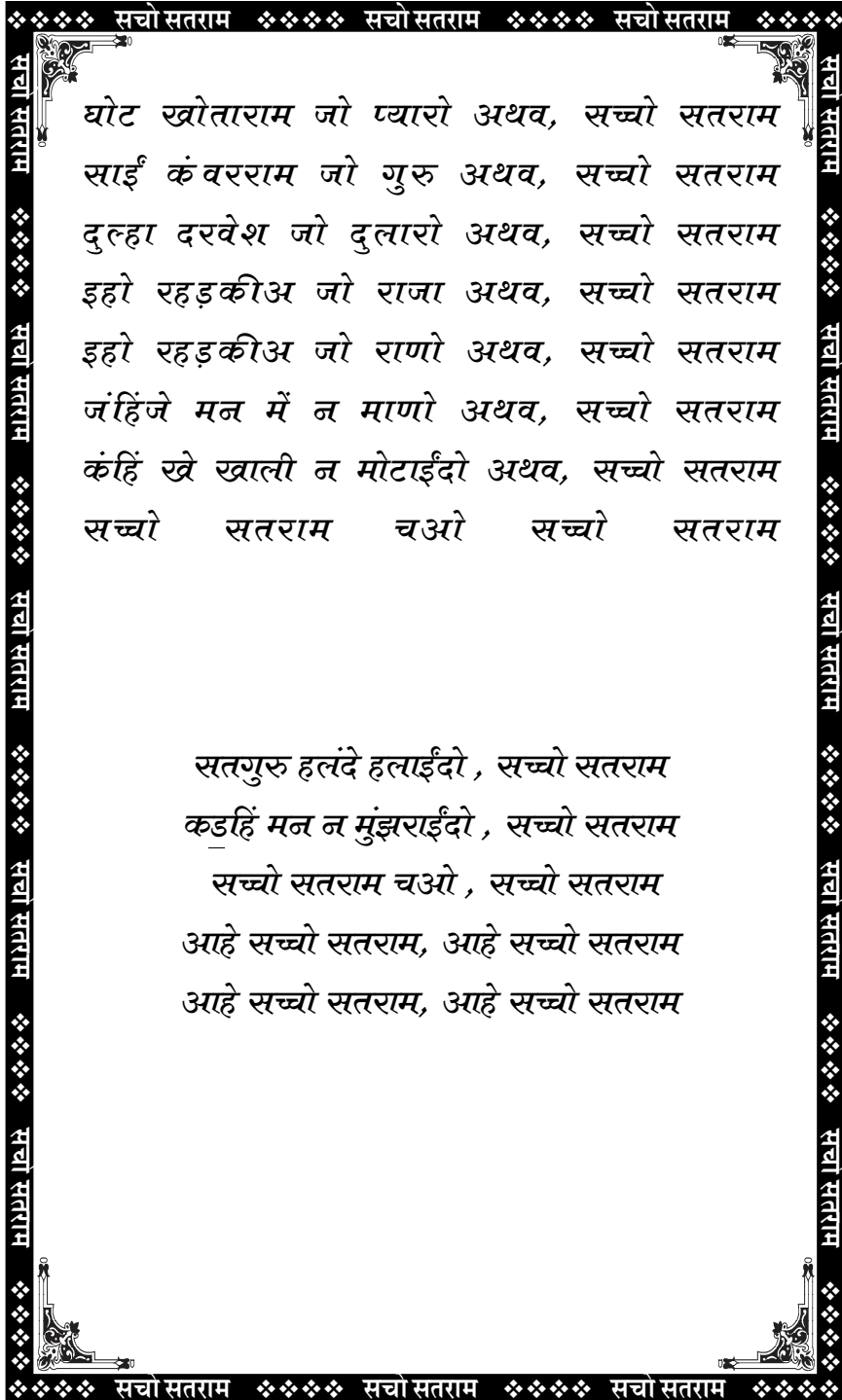
इहो पीरन जो पीर अथव, सच्चो सतराम
 जेको ठाहींदो तकदीर अथव, सच्चो सतराम
 इहो मन में वसे थो, सच्चो सतराम
 इहो सभ में वसे थो, सच्चो सतराम
 जेको दर्शन पसे थो, सच्चो सतराम
 पंहिंजे रंग में रंजे थो, सच्चो सतराम
 कन्दो रहमत जी निगाह अथव, सच्चो सतराम
 सच्चो सतराम चओ सच्चो सतराम

इहो साईं कन्हैयालाल अथव, सच्चो सतराम
 इहो ताज वारो साईं अथव, सच्चो सतराम
 इहो मस्तन जो मस्त अथव, सच्चो सतराम
 इहो दाढो जबरदस्त अथव, सच्चो सतराम
 इहो दुल्हा दरवेश अथव, सच्चो सतराम
 डींदो मुशिकल न पेश अथव, सच्चो सतराम
 इहो गरीबन जो सहारो अथव, सच्चो सतराम
 सच्चो सतराम चओ सच्चो सतराम

सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

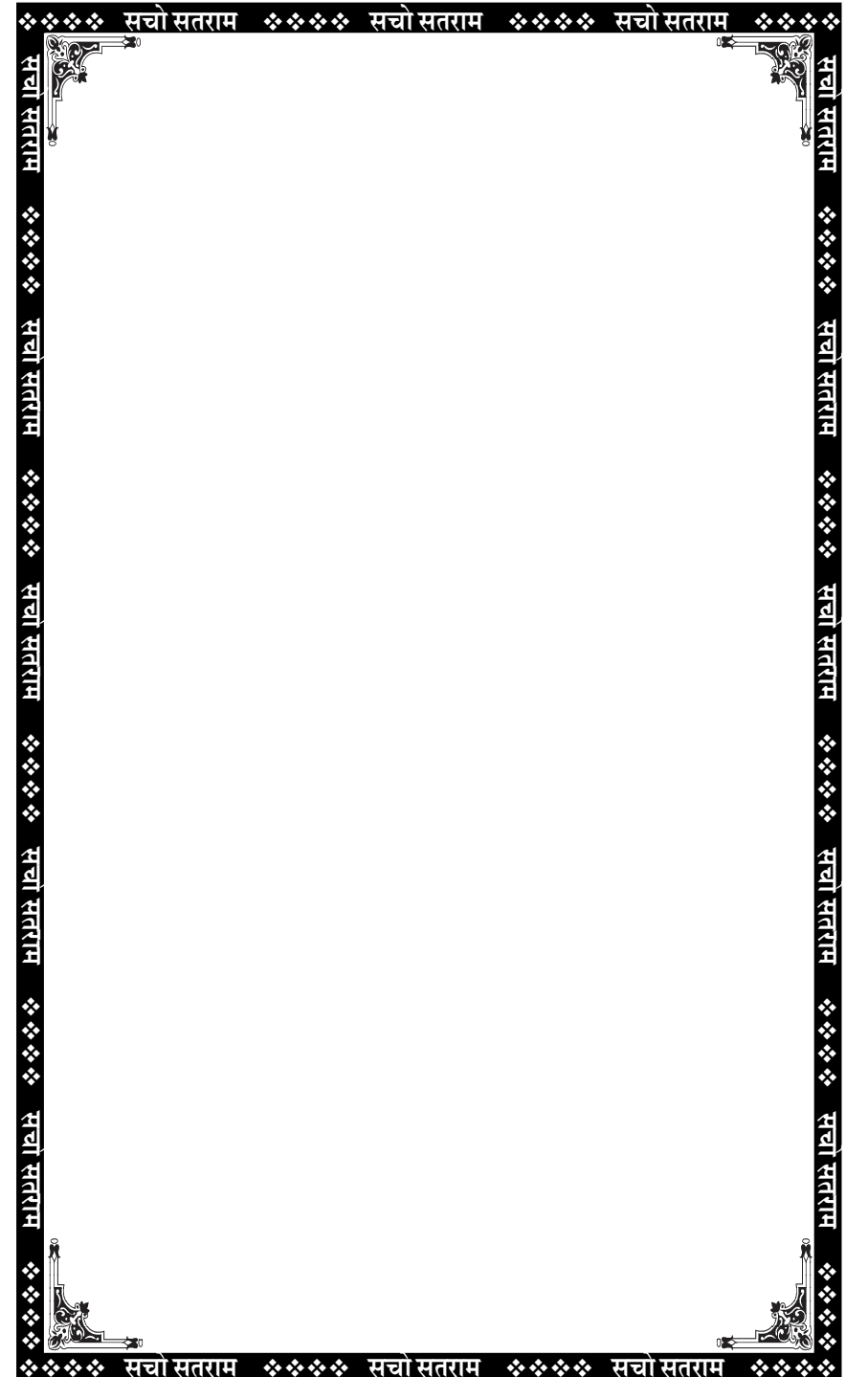
❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖
 સચો સતરામ
 જંહિંજો દર્શન હજૂરી અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો ઝોલ્યૂં ભરીંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો પુટડા મી ડીંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો કર્જ કટીંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો મર્જ મિટાઈંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 પંહિંજો દર્શન કરાઈંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો મૂંઝ મિટાઈંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 સચ્ચો સતરામ ચઓ સચ્ચો સતરામ
 ઇહો ત્રિલોકીનાથ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 કન્દો પૂરી સમજી આસ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 કન્દો દૂઝ દર્દ નાસ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો સચ્ચો સતરામદાસ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો નાથન જો નાથ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો હરદિલ જી આસ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 કન્દો કારિજ સમજા રાસ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 સચ્ચો સતરામ ચઓ સચ્ચો સતરામ
 ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖

❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖
 સચો સતરામ
 ઇહો ગરુ ગરીબ નવાજ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો મુઅલ જિઆરીંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો અણલિખ્યા બિ ડીંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો કર્મ કટીંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો નિયાણયૂં અઘાઈંદો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 જંહિંજો ભરિયલ મંડારો અથવ, સચ્ચો સતરામ
 જંહિંજી શેવા નિષ્કામ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 સચ્ચો સતરામ ચઓ સચ્ચો સતરામ
 ઇહો પાણ મગવાન અથવ, સચ્ચો સતરામ
 જંહિં સાં ગડુ કંવરરામ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો શાહન જો શાહ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 ઇહો બેપરવાહ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 કન્દો દુષ્ટન યે નાસ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 જંહિં રહ્યો વિશ્વાસ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 જંહિંજે દર્શન સાં રાસ અથવ, સચ્ચો સતરામ
 સચ્ચો સતરામ ચઓ સચ્ચો સતરામ
 ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖ સચો સતરામ ❖❖❖❖



घोट खोताराम जो प्यारो अथव, सच्चो सतराम
साईं कंवरराम जो गुरु अथव, सच्चो सतराम
दुल्हा दरवेश जो दुलारो अथव, सच्चो सतराम
इहो रहइकीअ जो राजा अथव, सच्चो सतराम
इहो रहइकीअ जो राणो अथव, सच्चो सतराम
जंहिंजे मन में न माणो अथव, सच्चो सतराम
कंहिं खे खाली न मोटाईदो अथव, सच्चो सतराम
सच्चो सतराम चओ सच्चो सतराम

सतगुरु हलंदे हलाईदो, सच्चो सतराम
कडहिं मन न मुंझराईदो, सच्चो सतराम
सच्चो सतराम चओ, सच्चो सतराम
आहे सच्चो सतराम, आहे सच्चो सतराम
आहे सच्चो सतराम, आहे सच्चो सतराम



सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१)

तर्ज: -----

थलु: मन में रख तू वसाए
सच्चो सतराम नालो प्यारा
दुख नास सभ करे थो
सच्चो सतराम नालो प्यारा

१. आला आहे सभिनी खां,
बाला आहे सभिनी खां,
सुहिणो आहे सभिनी खां
सच्चो सतराम -----

२. किस्मत जो हीउ धनी आ,
किस्मत हितां बणी आ,
ईश्वर खे वियो वणी आ,
सच्चो सतराम -----

३. माखीअ खां वध मिठो आ,
अमृत खां भी मिठो आ,
अंजुम चखे डिठो आ,
सच्चो सतराम -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२)

तर्ज: हीरनां खां आ महांगो, मोतीयुनि खां आ महांगो,
सतराम नालो मिठडो, अनमोल आ महांगो

१. सोन ऐं चांदी धन भी, हिन नाले तां मां घोरियां
नालो आ बाला सब खां, जिंद जान हिन तां घोरियां
आहेअलख जो नालो, सब शय खां महांगो
हीरन -----

२. हिन नाले में शफा आ, हर दुःख लही वजे थो
हिन नाले जे जपण सां, ईश्वर मिली वजे थो,
आहे ही नालो आला, सजे जग खां आ महांगो,
हीरन -----

३. सतराम नालो सुहिणो, ईश्वर खे वयो वणी आ
हिन नाले में रखीखुद, महिर मुंहिजे धणी आ
अंजुम सच्चो ही नालो, हर दर खां आ महांगो
हीरन -----

सच्चो सतराम ने कहा.....

- “बुजुर्गों की इज्जत और बच्चों का प्यार व संस्कार देने वाला इंसान सदा सुखी होता है।”
- “जब किस्मत की देवी मेहरबान हो तो तुम औरों पर मेहरबान रहो, उससे वो खुश होती है, वरना रूठ जाती है और मायूसी आती है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

(३)

तर्ज: तुम्हीं मेरे मंदिर,
थलु: तुंही सच्चे साईं, तुंही मेरा पूजा, तुम्ही मेरी जिन्दगी हो।
सांसाँ की माला में समिरन करूं मैं, तुम्ही बंदगी हो (२)

१. जिधर जाती हूँ उधर तुमको पाऊँ,
तेरे बिना साईं मैं रहे ना पाऊँ
जाऊँ बलहारी पर उपकारी, तुम्ही मेरे राम हो (२)
सांसाँ की माला-----

२. तेरी रजा में राजी रहूँ मैं, दुःख जो आये तुझे ना भूलूँ मैं,
तू ही जग दाता रहेड़की के राजा, तुम्ही मेरे श्याम हो (२)
सांसाँ की माला-----

३. तेरी करूणा का सागर ना मांगू,
तेरे चरणों की धूल मैं चाहूँ,
रंजीत ने माना, तुम्ही मेरे भगवान, सच्चे सतराम हो
तुम्ही सच्चे साईं-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जिस दिल, घर, जगह / स्थान पे नाम सिमरन और ईश्वर भक्ति होती है, वो जगह स्वर्ग वैकुण्ठ की तरह प्रभु कृपा का केंद्र हो जाती है।”
- “नाम पाने से सुख, बल व ज्ञान की प्रप्ति होती है, सो नाम जपो और सुखी रहो।”

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

(४)

थलु: घाटो कडहिं न मिलंदइ, ऐतबार करे डिसु,
सच ऐं प्रेम जे नाने सां वापार करे डिसु।

१. कण डींदे मण डींदेइ, अहिडो दानी आं,
उन जी सखा जो जग में न कोई सानी आ,
हिन जे नाले प्रेम सां प्यारा, दान करे डिसु
घाटो-----

२. नाम ऐं समिरण सत्संग जो सौदो वठु तूं अदा
तन मन रहंदुई पवित्र हिरदो सफा सदा
सतराम साईं जो, मिठडो प्यारा नाम जपे डिसु
घाटो-----

३. प्रेम पक्को रख सतगुरु सां, कर नेम सच्चो
तारे छडे थो पल में सतराम सच्चो,
अंजुम निवडत ऐं नियाजी सां सेवा करे डिसु
घाटो-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “शत्रुता रखने वाले से भी मित्रता की भावना रखना और निभाना सर्व श्रेष्ठ गुण और महानता है।”
- “सुख या दुख भाग्य से ज्यादा अपने कर्मों का फल होता है, सो कर्म अच्छे करो और सदा सुखी रहो।”

❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖ सचो सतराम ❖❖❖❖

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५)

तर्ज: तेरा साथ है तो मुझे क्या कमी है।
 थलु: लगल दाग चोले जो मिटजी वजे थो
 मगर दाग दिल जो मिटाईदो सतगुरु
 अचनि केतरा भल कस्ती खे लोडा
 पर पार तोखे लगाईदो सतगुरु
 लगल -----

१. रख सतगुरु ते मायुस थीन, ओ.....रख मुक्कदर ते मायुस थीन
 वयल भाग तुंहिंजा वराइंदो सतगुरु
 नसीबन खे सुख सां सजाईदो सतगुरु
 लगल दाग -----

२. दुनिया मतलब जी आहे पियारा
 मेटे मुंहं ही वेंदें मुश्किल में सारा
 मगर मुंहं न तोखां मटाईदो सतगुरु
 आ विख विख ते नातो निभाईदो सतगुरु
 लगल दाग -----

३. भले को पंहिंजे दर तां धिकारे
 तोखे छो न पारस को हर हर रोआरे
 सडे तोखे सीने सां लगाईदो सतगुरु
 लगल -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(६)

तर्ज: हमें और जीने की चाहत न होती
 थलु: जिते आहे माफी उते प्यार आहे
 जिते प्यार आहे, उते रब रहे थो

१. हीउ झेड़ो ऐं झगिड़ो हर शय विजाए
 घर जे दिलन जो थो पाणी सुकाए
 जिते देह जो न तकरार आहे, उते-----

२. तूं पैसे जी खातिर पंहिंजा विजायए
 अकलो जे थींदे, कंदे हाय हाय
 बधी, एकता ऐं जिते प्यार आहे, उते -----

३. न रख मंदायूं पारस अंदर में
 सिक प्यार जा हथ आ जंहिं भी घर में
 उहो घर मंदिर आ, सुर्ग द्वार आहे, उते -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “दूसरों के आंसू से या औरों को दुख देकर पायी गयी खुशी खुद को रूलाने वाली होती है, इसलिए खुशी देकर खुशी लो।”
- “जो इंसान अपने दुख को दुख न समझे और दूसरे के दुख को सुख में बदल दे वही महान है।”
- “जैसे घर में दिया जलाने से झरोखे भी रोशन होते हैं, वैसे मन में मालिक आते ही सब अंग भगवत प्रेम में खिल उठते हैं।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(9)

तर्ज: न माना मेरी जान

थलु: सच्चे साईंअ सां मुहब्बत, सच्चे साईंअ सां
यारी

हिते बि बहारी, हुते बि बहारी

१. फकिर्यानी तबीयत, नियाज़ ऐं निवड़त
घुर तूं सांई कां नाम जी रहमत
संग सच्चे में जे तुं गुजारी
हिते बि बहारी -----

२. कंवर कई भक्ती, शेवा ऐं शक्ती
जंहिं कंवर खे बणायो अहिडी आ हस्ती
कंवर खे कयो जंहिं आ परउपकारी
हितेबि बहारी-----

३. रंजीत जप तूं नाम साईं जो
अठई पहर कर ज़िकर साईं जो
सच्ची कर तूं शेवा, जिंदगी ही सारी
हिते बि बहारी -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “शुद्धी सिर्फ शरीर की सफाई का नाम नहीं, पर पवित्र नाम से शुद्ध हृदय में ईश्वर को बसाना ही असल शुद्धी है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(८)

थलु: जंहिंखे नाने कयो आबाद, दिल खे शाद,
उहो हथ मथे करे, (२)
जंहिंखे दुल्ह कयो मालामाल , करे महर
कयो खुशहाल, उहो हथ मथे करे

१. सच्चो सतराम आ पर उपकारी, रहेड़की वारो पीर साहेब
सतारी
जंहिंजो बेड़ो कयो आबाद, करे महर कयो उपकार,
उहो-----

२. पुज पितामह खोताराम जो प्यारो
कंवर जो रूप जंहिं में दुल्होदुल्हारो
जंहिंखे रंगी कयो आ लाल
करे महर कयो निहाल,
उहो-----

३. रंजीत सागर मां वडभागी अहियां
सच्चे सतराम जो शेवक सडायां
जंहिंजो वढो वसायो आ राम
करे महर डिनो पंहिंजो नाम,
उहो-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(९)

थलु: सच्ची रहेड़की सच्ची धरती
सच्चो सतराम वडी हस्ती

१. जंहिंजी चादर वडी आहे
ढके वेठो आहे सब खे
सच्ची छाया, सच्ची छत्री, सच्चो-----

२. शहर रहेड़की आहे रोशन
सच्चे सतराम जो गुलशन
वैरागीन जी वसे वस्ती, सच्चे-----

३. सच्चनि सां साण आ साई
कंदो कल्याण आ साई
सच्ची भक्ती, सच्ची शक्ती, सच्चो-----

४. जेसीं जियां लिखंदो रहां
रतन चवे गुण गाईदो रहां
कटे कुमती, डींदो सुमती, सच्चो-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जिस से क्रोध, अहंकार, माया, मद, लोभ, गृणा व नफरत मिटेवही त्याग है।”
- “ऐसे कर्म करो जिससे औरों को नहीं ईश्वर की रहमत को पा सको क्योंकि वो राज़ी तो सारा जग राज़ी, फिर लोक परलोक दोनों तेरे हैं।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१०)

तर्जः कसमें वादे प्यार वफा सब वादे है बातों का प्यार
थलुः सतगुरु मुंहिंजा सेवक तुंहिंजा, आहियूं सब नढड़ा बार
गुण तुंहिंजा असां कहिड़ा गायूं, आहियूं असां सब भुलियल बार

१. अहिसान केडा सभ जे मथां कयव, लाहे सधंदो न कोई बार
समझ न कहें में अहिड़ी सतगुरु मिठ्ठो डिनो अथव सभ खे प्यार
अगिते भी ... कंदव कृपा, लहंदव पल पल सभ जी सार
सतगुरु-----

२. गलत्यूं केडीयूं सभ खां थीअन पयूं नाहे कोई उनजो अंदाज
लेख न तुंहिंजो लिखजो सतगुरु करे छडियो साईं नजर अंदाज
माफी डींदव सतगुरु सभखे, बुधदंव मुंहिंजी विरह पुकार
सतगुरु-----

३. हथड़ा बधी बई ... सीस निवाए चरण चुमां मां वारों वार
ज्ञान पंहिंजे सां ... मुंहिंजे अंदर जो खोलियो आहे तो ही द्वार
समझ इहा ... रहे मुंहिंजे अंदर में जाते आहे तुंहिंजो विराम
सतगुरु मुंहिंजा -----

४. चरणन में तुंहिंजी ममता मिले सदा, कर्म इहो हरपल कंदा
मुर्शिद मुंहिंजा रहम करे सभखे बक्षीस शब्द जी अहिड़ी कंदा
नेण खोलींदव सतगुरु सभजा, राह रोशन कंदव तारणहार
सतगुरु-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(११)

थलुः तुंहिंजा आहियूं, तुंहिंजो दर कीअं छडे साईं वेंदासीं
जेसीं आहे दम में दम रहेड़की कोन छडींदासीं,
तुंहिंजा-----

१. तोखां सिवाये कीअं सरे, कुरब छडियो आ काबू करे
जेसीं हयाती आ साईं, तुंहिंजी गुलामी डींदासीं
तुंहिंजा-----

२. जेसीं आहे साहु में साहु, तुंहिंजी चुमंदासीं दरगाह
तुंहिंजे दर जी शेवा सच्ची, नाना कोन छडींदासीं
तुंहिंजा-----

३. अंजूम जो तूं साईं आहीं, सबजो तूं मालिक आहीं,
हथड़ा जोड़े तुंहिंजे अगियां, तोखां माफी घुरंदासीं
तुंहिंजा-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “अपनी तुलना औरों से करते रहने वाला अहंकार से अकड़ता या जलन में जलता रहता है सो अपनी समझ से संभालके चलो।”
- “जैसे जौहरी हीरे को तराश कर सुंदरता देत है, वैसे सतगुरु, हरि नाम से मन को शुद्ध कर प्रकाशमय करता है।”
- “जिसका मन किसी भी स्थिति / अवस्था में सम रहता है उसी के सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१२)

थलु:हले शेवा हलो रहेड़की, भाग वारी नाने जी रहेड़की
नसीब वारी नाने जी रहेड़की

१. करण शेवा रहेड़कीअ में अचजाएं
वठण मेवा रहेड़की में अचजाएं
मिठा मेवा, हलो रहेड़की भागवारी-----

२. साईं कंवरराम शेवा करे वियो,
गरीबन जा घरड़ा भरे वियो
भरण झोलियूं हलो रहेड़की, भागवारी-----

३. दास कुंदन किस्मत खुली आ
रहेड़की साहेब जी शेवा मिली आ
डिसण जलवा हलो रहेड़की, भागवारी-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जैसे लाभ व हानि का विचार करके व्यापार किया जाता है, वैसे अगर पुण्य या पाप का विचार करके कर्म किया जाए तो जीवन संवर जाए।”
- “अहंकार भरे गलत रास्ते से वापस मुड़ने में अपयश / गिला नहीं पर यश, इज्जत मिलती है।”
- “हर बात को तोल विचारके उत्तमता को स्वीकार और खराबी को परित्याग करने वाला ही महान मानव होता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१३)

थलु: गाढो चोलो, पग पुन्हल जी
आहे मशहूर रहेड़की राणल जी

१. दर आ सखा जो सखावत हले थी
साईं खोताराम जी महर वसे थी
महिमा सच्ची आहे सचल जी
आहे-----

२. पंहिंजे हथनि सां रहेड़की सजाई
साईं कंवरराम शेवा कमाई
शेवा अघजी वेई कंवर जी
आहे-----

३. दुल्ह दरवेश भी रंग रचाया
अण थियणाकम साईं करे डेखारिया
लाज भी रखी दर आयल जी
आहे-----

४. लखें करोड़े आशाऊं अचनि था,
भरे झोलियूं पंहिंजयूं वजनि था
सुहिणी डेवड़ी आहे. सुहिलल जी.
आहे-----

५. रंजीत सागर छडियां कींअं मां दरडो
मोहे छडियो आ संतन हीउ मनडो
ओट भी वरती आहे मिठल जी
आहे-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१४)

थलु: असां शेवक जो नाना तोते नंग आ
अहियूं भाग वारा मिलियो तुंहिंजो संग आ

१. न बिए दर वाझायूं, न बिए खे सुणायूं
असां हाल दिल जो था तोखे बुधायूं
अची रहेड़कीअ में लगायो तो रंग आ
आहियूं-----

२. वसाए छडी नाम जी तो आ वरखा
तुंहिंजे दर्शन लाए सिके दिल थी हरका
जोड़े नाम सां तो छडियो अंग अंग आ
आहियूं-----

३. कण कण में सतगुरु तूं निरवार आहीं
दर्द वंदन जो तूं दातार आहीं
तुंहिंजे दर जो नौकर हीउ सारो जग आ
आहियूं-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “ईश्वर भक्त सदा आनंद में रहते हैं, क्योंकि नाम सिमरण करके उनके सब दुख और विषय – विकार खत्म हो चुके हैं।”
- “नाम सिमरण से योग दृष्टि पाकर, इंसान जीवन मुक्ति व आत्माओं का रहस्य / असलियत तक पा लेता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१५)

तर्जु: होठों से छो लो तुम

थलु: देखो इस दुनिया में, सतराम सां कोई नहीं
सतराम तो क्या होगा, कंवरराम सा कोई नहीं

१. त्रेता में हुआ था राम, द्वापर में बना वो श्याम
अब इस कलयुग में इक नाम सच्चा सतराम
संसार के सागर में (२) इस नाम सा कोई नहीं
देखो-----

२. सतराम के मंत्र में भगवान की है पूजा
सतराम तो एक ही है, कंवरराम नाम दूजा
गुरु शिष्य ने किये जो काम, अंजाम सा कोई नहीं
देखो-----

३. सतराम की माला को, कंवरराम जपे ऐसे
कुंदन थी जपायो ऐसे, ध्रुव, परहलाद जपियो जैसे
पीयो राम नाम का रस, इस जाम सा कोई नहीं
देखो-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “दीन दुखियों को दान देना सबसे उत्तम काम, पर जिसे दान देने की ताकत न हो वो कोई अच्छाई कर उसके लिए वही दान है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१६)

थलु: गुरु त मुंहिंजो अहिड़ो फकीर आ
प्यार में पूरे जग खां अमीर आ
(साई सतरामदास) (२) ठहींदो सभजी तकदीर आ
गुरु-----

१. जींअं पिता पंहिंजे बारनि खे गोद में विहारे थो
हिक बराबर समिड़ी सभ खे (सागी नजर निहारे थो) (२)
साई जा बचड़ा सभ हिक जहिड़ा
हर हिक प्रेमी खीर ऐं खंड आ
साई-----

२. जे अचे कोई रोअंदो दर ते पाण आ गोढ़ा उघंदो।
अहड़ो आहे रहिमदिल कंहिंखे (रोअंदो नाहे डिस्सी सघंदो) (२)
खिलंदे खिलंदे सिर ते सहंदे
पोई भी सभजा उघंदो नीर आ
साई-----

३. रवि सिकायल हैसियत खां वध, मिलियो आ प्यार मुंखे
मालिक खां बस डात घुरी मूं (मिली वियो दातार मुंखे) (२)
शेवक बणिजी शेवा दरजी
कंदो रहां मां डाढी उकीर आ
साई-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१७)

थलु: गाढ़े चोले वारा साई रंग लाल भलो तई
साई कंवरराम प्यारो जोड़ीवाल भलो तई

१. नालो तुंहिंजो साई पर उपकारी
रास रचाई जींअं कृष्ण मुरारी
तुंहिंजी प्यारी आ निशानी कन्हैयालाल भलो तई
साई-----

२. साई विसपत मेलो लगंदो आ प्यारो
हले थी शेवा हिते, करे भाग वारो
लगे तुंहिंजो जशन मेलो हर साल भलो तई
साई-----

३. रूप हजुरी साई वेठो रंगड़ो रचाए
सुरेश सच्चो सतराम थो जपाए
असां खे डिनो राजा साई विक्रमलाल भलो तई
साई-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जैसी प्रीत परिवार से होती है अगर वैसी भक्ति सतगुरु के लिए हो तो सब बंधन मिट जाएंगे और मोक्ष प्राप्ति होगी।”
- “दिल पूरे शरीर में एक ऐसा मास का टुकड़ा है, जिसके सही होने से सब सही और खराब होने से सब कुछ खराब हो जाता है सो दिल साफ रखें।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१८)

थलु: सतरामदास जे दामन में, मां त प्यार ही प्यार दिठुम
सभ जा थिया कल्याण, अहिड़ो इसरारु दिठुम

१. ओ ... नव रातीयूं जे दर ते टिकिया
से मालामाल थिया, पूरा तिन था सुवाल थिया
गणती, दुःखी दिलड़नि खे मिलंदे, मां त करार दिठुम
सभ जा थिया -----

२. ओ अमीर गरीब जी अरजी निमाणी
सांईअं वटि थी अघे, कंहिंखे रोअंदो डिसी न सघे
राज निआज जी राह, डसिंदड़ मददगार दिठुम
सभ जा थिया -----

३. रवी सिकायल अंत समय में
डींदो आ साथ धणी
थींदो राखो आ सडड़ा सुणी
दर ते सदाई प्यारा सभिनी जा
बेड़ा पार दिठुम
सभजा थिया कल्याण

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “पर स्त्री को माता, पराये धन को धूल और सब जीवों को
अपने समान समझने वालो के लिये स्वर्ग के द्वार सदा खुले
रहते हैं।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१९)

थलु: बीठो आहियां झले झोल मां सांई तुंहिंजे
दर ते, सांई सच्चा तुंहिंजो नाम जपियां थो
चरणनि में तुंहिंजे सीस धरियां थो
अंत समय में डिजाए नाम पंहिंजो मुख ते
बीठो -----

१. जेसीं ताई साहु हीउ रहंदो
नेठि वजी मालिक सां मिलंदो
इहा ई तोखां बाझ घुरां थो
नेम शेवा जो दान घुरां थो
अंत -----

२. कुड़ो हीउ संसार आहे, कुड़ो ही परिवार आहे
सच्च जी तोखां वाट घुरां थो
आखिरी जो आधार घुरां थो
अंत -----

३. पवन चई पंहिंजो हाल छडियो आ
डेवरी में करे सुवाल छडियो आ
तोखां तुंहिंजो नाम घुरां थो
तरण जो सामान घुरां थो
अंत -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२०)

थलु: कर डेवरी वारेखेयाद थीं दी तुंहिंजी भली भली
जप प्रेमी मिठड़ो नाम थीं दी -----

१. जेको सांई सतराम खे धियाए थो
पंहिंजो मन पवित्र बणाए थो
हिन नाले में शक्ती आहे
भव सागर पार लगाए थो
रख नाने सां तूं चाह, थीं दी -----

२. हिन दर ते सीस झुकाए डिसु
पंहिंजे मन जो हाल बुधाए डिसु
सब रोग तुंहिंजा वेंदा कटजी
तूं पांद गिचीअ में पाए डिसुं
अचु अंजुम बणजी गुलाम, थीं दी -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “बुरे या खराब शब्दों का जवाब उसी अंदाज में नहीं देना चाहिये, क्योंकि कोयल कौए की बोली नहीं बोल सकती है।”
- “पुण्य / पाप किस के लिए भी करें पर उस का फल खुद को ही मिलेगा, कोई भी उसमेमं साथी / भागीदार नहीं होगा इसलिए किसी के लिए भी पाप न करें।”
- “जैसे सब बच्चों का एक होना माता की खुशी होती है वैसे हम सब की एकता उस मालिक की खुशी होती है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२१)

थलु: खुलियल आ हट मुंहिंजे सच्चे सतराम जो
अच तूं प्रेमी प्यारा, वठ तूं प्रेमी प्यारा
सौदो सच्चे आ, सच्चे सतराम जो

१. शेवा सिमरन ज्ञान मिले थो
सच जो सौदो दान मिले थो
अच तूं -----

२. दया मेहर हिते बाझ मिले थी
रहेमत जी हिते चादर मिले थी
अच तूं -----

३. दुख कटे सुख डे थो नानो
संगत चवे सुखी करे थो नानो
अच तूं -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “ये न देखो कि कौन कह रहा है, पर ये देखो कि क्या कह रहा है।”
- “जैसे कोई तुम्हारे बच्चों को प्यार करे तो तुम्हें प्यारा लगता है वैसे हर जीव से प्यार करने वाला भगवान को प्यारा लगता है।”
- “ईश्वर को याद और की हुई भलाई को भूल जाने वाला सदा सुखी रहता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२२)

थलु: तुंहिंजो सांई, मुंहिंजो सांई
हिकडो आहे सतराम सांई

१. हिक लखन में लाल आहे
हिक लखन में लाजपाल आहे
चंड में सांई, तारन में सांई
हिकडो -----

२. सुहिणो चोलो गुलाब जहिडो
मुख आ सुंदर महेताब जहिडो
पिली पगडीअ वारो सांई
हिकडो -----

३. रहम वारो, बाझवारो, सबाजो आहे नानो सहारो
दुख मां अंजुम करे पार सांई
हिकडो -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “परमात्मा कितनी भूलों को माफ कर देता है, अगर इंसान उसकी उस रहमत को याद कर किसी की भूलों को माफ करना सीखे तो महान बन जाए।”
- “सिर्फ ईश्वर नाम लेने से उसे पाया नहीं जा सकता पर सतगुरु कृपा हो जब वो अंदर बस जाता है तो मालिक मिलन हो जाता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२३)

थलु: पयो बेडो असांजो तरे, आ गम खां परे
सच्चे सतराम जे करे
हर गम खां आहियूं परे, सच्चे -----

१. जाडे वजूं था, जाडे अचूं था
सच्चे सतराम जो नाम जपियूं था
जेको ध्यान अंदर में धरे
उहो काल खां कीअं मरे
सच्चे -----

२. कुरब क्या हिन रहेडकीअ वारे
अणतारू बि छडिया हिन तारे
जेको ध्यान सांई जो धरे,
सच्चे -----

३. सारी संगत जा भाग खुली विया
रहेडकीअ वारा संत मिली विया
पयो अंदर असांजो ठरे
सच्चे -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “कभी भी कर्ज को कम, घाव / जख्म को हल्का, आग को तनिक ना समझो। ये देखने में तो थोड़े, पर बढ़े तो सबकुछ खत्म कर देते है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२४)

थलु: हिकड़ो धनीअ जो बियो, आ तुंहिंजो आसरो
सच्चा सतराम सांई, तुंहिंजो आहे आसरो

१. राज जो मालिक आहीं, तुंहिंजे अगियां कहिडी मजाल आ
मूं मिस्कीन निमाणीअ जो सब मालूम तोखे हाल आ
सदा रहे जाएं राजी तूं आं आसरो
सचो सतराम-----

२. राणल मुंहिंजा रहेडीकअ वारा, हुजत नाहे का तोखां
निवडित, नियाज वंदीअ जी, आहे वाट सदाई तोसां
सदा रहजांए-----
सच्चा-----

३. जग रुसे भल रुसी वजे, हिक मालिक तूं ना रूसजांए
अंजुम चवे नाले सांईअं जे, अर्ज मुंहिंजो हीउ मजिजांए
सदा रहजांए-----
सच्चा-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “सतगुरू का चिंतन, ध्यान, आदेश पे अमल, हृदय में उल्लास और मुख पे हरिन नाम होने से मोक्ष के द्वार खुल जाते हैं।”
- “भाग्य किस्मत से, किस्मत कर्मों से, कर्म वचनों से और वचन बनते हैं सतगुरू कृपा से सो संत शरण पा के भाग्यशाली बनो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२५)

थलु: चालीहो आयो राम जो, मुंहिंजे सांई सच्चे सतराम जो
बाबा खोतारम जो, रहेडीकअ वारे राम जो

१. अचो सभेई भाउर, भेनर, सच्चे सांईअ जा गीत गायूं
तन मन धन अर्पण करे सेवा सां जीवन ठाहियूं
श्रद्धा सच्ची मन में रखी सिमरन कयूं नाम जो
सुंदर सुहिणे श्याम जो
सांई-----

२. सांई जे चालीहे सां अचे थो गुरुपुजा जो डींहूं वडो
इहो डींहूं सेखारे थो, सतगुरु सां नींहूं सच्चो
डेवरी साहेब ते चादर चाढ़े, जाप कयूं धुनी साहेब जो
सुंदर-----

३. नवरातो, चौकड़ी, चालीहो, जेको प्रेमी नेम करे
रंजीत सागर पक्क चवां थो, पूरी तंहिंजी आस थिए
सुबह शाम दर्शन कयूं, सांई सच्चे सतराम जो
रहेडीअ वारे-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “क्रोध से प्रीत, अहंकार से नम्रता, माया से मैत्री और रिश्तेदारी और लोभ से सब कुछ नष्ट हो जाता है।”
- “संत और महात्मा ऐसे प्रज्ज्वलित दीप हैं जो हमारे अंतरमन के अंधकार को मिटाके प्रकाशमयी बना देते हैं, और उनको कोई आंधी भी बुझा नहीं सकती है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२६)

थलु: नाना साईं महेर कर, सच्चा साईं महेर कर,
बधी हथिड़ा अर्ज कयां थो
तोखां रहेमत साईं घुरां थो
सच्चा सतराम साईं ना देर कर

१. साईं सदाईं रहेम कजाएं तूं,
डेवरी वारा बाझ कजाएं तूं
सच्चा-----

२. राणल हरदम राजी रहिजाएं
मुंहिजे ऐबनि खे न डिसजाएं
सच्चा-----

३. डेवरीअ वारा सुहिणा साईं, अंजुम चवे तूं मालिक आहीं
सच्चा-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “दुसरो को अपना बनाने से पहले अपने मन को अपना बनाओ क्योंकि मन के विचार शुद्ध हुए तो कोई दूसरा होगा ही नहीं, सब अपने ही होंगे।”
- “सूर्योदय से अंधकार और सतगुरु ज्ञान से अज्ञान मिट जाता है।”
- “अपनी प्रशंसा या तारीफ सुनते समय होश बनाये रखने वाला सदा सुखी व काम्याब रहता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२७)

तर्ज: ये बंधन तो प्यार का बंधन है (करन अर्जन)
थलु: सुख चाहिण सां न मिलंदइ दुख चाहिण सां न वेदइ
छोन हिला करे हजारे, माण चहण सां न मिलंदइ
लिखियो जेकी मुक्कदर में आहे, हिते मिलणो सो आहे

१. पल अध पल जी सुख जे खातिर, माया में भिटकीं पियो
दुनिया जी दलदल खे सुख सच्चो तूं समझी पियो
छो गफलत में गुम थियो आं, छो भ्रमन में भिटकयो आं
छडि इच्छाउनि में जीअण, छो विषय में अटिकयो आं,
लिखियो-----

२. सभ खे मिलंदो हितड़े आ फल, करमन जे आधार ते
सिक सां करणो पवंदो भाणो, हितड़े त स्वीकार रे
वसु कोई भी न हलंदइ, कुछ चाहिण सां न थींदइ
रह राजी रब जी रजा ते, हर हाल में थीअणो थींदइ
लिखियो-----

३. लह गोलहे जग मां कामिल मुशींद, रख तंहिते विश्वास पक्को
भक्ती, शक्ती, ज्ञान कला, घुर तूं हिन खां दान इहो
गुरुअणलिखियो लीखंदो आ, सुख रूहानी डींदो आ
विश्वास त आनंद जो आ, बंद किस्मत खोलींदो आ,
गुरु लिखियो मेटे सघंदो आ, अणलिखियो लिखंदो आ
सुख-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२८)

थलु: सांई सतरामदास पिआरा, हो-----
 नाना तुंहिंजी रहेड़की वसे
 सदा वसंदा रहण तुंहिंजा द्वारा , नाना---

१. संतन में सिरमोर तूं आहीं, सखावत में सांई जोर तूं आहीं
 तुंहिंजा भरियल आहिनि भंडारा, नाना -----

२. दर तुंहिंजे ते जेको अचे थो, खाली कडहिं कोन वजे थो
 तुंहिंजा हर हंधि लगन था नारा, नाना -----

३. महिमा तुंहिंजी नियारी, सुरत तुंहिंजी सभखां प्यारी,
 सांई चोड़ीअ जा चिमकारा , नाना -----

४. दास शमनि तुंहिंजे दर जो दिवानो,
 महेर कजाएं सांई आहियां तुंहिंजो बानो
 पिली पगड़ी गाढ़े चोले वारा
 नाना -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “प्रेम का अर्थ दिखावा नहीं पर व्यवहार में अपनों और हर एक जीव के साथ एकता और अपनेपन का अनुभव खुद महसूस करना है।”
- “सतगुरु की रहमत लेते रहो क्योंकि अगर वो साथ है तो कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता और सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२९)

थलु: तूं याद कर गुरुअ खे गुरु दौड़े ईदो
 सच्चो सांई तुंहिंजी मुश्किल मिटाईण ईदो

१. तूं छो थो घबराई, तोसां साण आ सांई
 तुंहिंजी अवली सवली में डींदो साथ आ सांई
 तुंहिंजी सिक डिसी सतगुरु तोडे पाण ईदो
 सच्चो-----

२. सदा शुकर कर तूं बंदा
 ऐं संतन सदी पचार
 पोए डिस तूं डेवरीअ वारो तोखे खुशियूं डींदो हजार
 तुंहिंजा कारज करण सतगुरु तोडे पाण ईदो
 सच्चो-----

३. छडि भ्रम बुलावा सागर, अच रहेड़ीकअ में प्यारा
 सच्चे सांईअं जो कर सिमरन ऐं कर शेवा तूं प्यारा
 रंजीत पार पुजायण नानो पाण ईदो
 सच्चो-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जीत उम्मीद पे नहीं पर अमल से हासिल होती है, सो ईश्वर व सतगुरु पे भरोसा रखकर आगे बढ़ो।”
- “दीपावली के दीप हमें समझा रहे हैं कि खुद को जला कर दूसरों को रेशन करने वाले ही सदा अमर रहते हैं।”
- “सत्कर्म ही इंसान के अंदर व बाहर उजाला करते हैं।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३०)

थलु: बोल प्यारा बोल तूं बोल
सांई सच्चो सतराम तूं बोल
सांई सच्चे सतराम जो सिमरन,
दुनिया में आहे अनमोल
बोल-----

१. दुख में सिमरन सुख में सिमरन, हर पल सिमरन कर प्रेमी
हर को पुछेहीउ शीष आ कंहिंजो, अहिडेबणिजी वजुनेमी
तुंहिंजो घर ही मंदिर आ, बाकी सारी दुनिया गोल
बोल-----

२. पुज पितामह खोताराम जो, राज दुलारो आ नानो
रहेडकीअ साहेब में ईश्वर जो हीउ नूरी आहे नजरानो
सुर्ग खां वध हीउ सुंदर आ, दुनिया में नाहे जंहिंजो मोल
बोल-----

३. हिन नाले में शक्ती आ, हिन नाले में आ राज रखियल
हिन नाले में हिन दुनिया जा सभई आहिनि वेद पढियल
दास कुंदन बंद पयल, पंहिंजी प्यारी अखडियुनि खे खोल
बोल-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “अपनी मेहनत से मिली दुर्लभ काम्याबी से ही सुख, सुकून और खुशी मिलती है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३१)

थलु: आहे कबुली तुंहिंजी गुलामी सांई
रहिमत कर तूं सभ ते नाना सांई
आहे-----

१. महेर कंदे तूं, बाझ कंदे तूं, आसरे तुंहिंजे आहियां (२)
पक्क आ मुंखे कोन छडीदे सांई
रहिमत-----

२. मन जो मालिक, तन जो मालिक
साह जो मालिक तूं आ (२)
पक्क आ-----

३. रहिम बि कर तूं, बाझ बि कर तूं
अंजुम अर्ज करे थो (२)
पक्क आ-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “दरिया के समान दरियादिल और धरती की तरह नर्म व उपकारी इंसान ही सूर्य के समान रोशन रहता है।”
- “वाणी, जुबान के दुरुपयोग से कितने ही शारीरिक और मानसिक रोग पैदा होते हैं सो इसका संभालके उपयोग करो”
- “दूसरों के दुखो और तकलीफों को देखकर सीखो और उन खराबियों व खामियों से दूर रहो जो उनकी तकलीफों का कारण बनी।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३२)

थलु: मुंहिजे सांई सतराम दास खे
गाढो चोलो प्यारो लगे
मुंहिजे रहेड़कीअ वारे राम खे ,
गाढो चोलो प्यारो लगे-----

१. पुज पितामह खोताराम जो प्यारो
सुंहं में सतगुरु आहे सोभारो
मुंहिजे सुहिणे सुंदर शाम खे, गाढो-----

२. कुंडल कनन में जलवेदारी
सच्चे सतराम आ परउपकारी
मुंहिजे घोट सखी घनश्याम खे. गाढो-----

३. सच्चे सतराम सां दिल आ लगाई
रंजीत पंहिंजी जिंदगी बणाई
मुंहिजे डेवरी वारे राम खे . गाढो-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “क्रोध या गुस्से को काबू में रखो क्योंकि इसकी शुरुआत जोश या जुनून और अंत परेशानी या शर्मिंदगी से होता है।”
- “सबके साथ समानता के व्यवहार से बरकत व रहमत बरसती है सो समानता धारण करो।”
- “झूठ और झूठी प्रशंसा या तारीफ से वचन, बोल, जबान पर से भरोसा खत्म हो जाता है, सो इनसे बचो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३३)

थलु: तुंहिंजा आहियूं बिए जा नाहियूं
सच्चा सतराम तुंहिंजा दास आहियूं

१. राम तूं आं, श्याम तूं आ
सच्चा सतराम भगवान तूं आं
तुंहिंजा -----

२. दुख में तूं आं, सुख में तूं आं
सच्चा सतराम कण कण में तूं आं
तुंहिंजा -----

३. मन में तूं आ , तन में तूं आं
सच्चा सतराम धड़कन में तूं आं
तुंहिंजा -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “खुशहाली ईश्वर की रहमत, गरीबी उसकी शिक्षा समझो क्योंकि सदा शुक्र करने से उसपर रहमत बरसती है और कष्ट दूर होते हैं।”
- “प्रभु प्रेम व सतगुरु से पाये पवित्र नाम सिमरन में बैठने से इतना आनंद मिलता है, जितना जिंदा मछली को पानी में छोड़ देने से।”
- “स्वर्ग चाहते हो तो दिल को साफ रखो क्योंकि वो अच्छाईयों का घर है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३४)

थलु: सतराम मेरी दुनिया, दुनिया से क्या मांगूं
मेरी दुनिया तुम ही हो, दुनिया से क्या मांगूं

१. धन दौलत क्या मांगूं, मुस्कान जो दी तुमने
हम जैसे बच्चों को, पहचान जो दी तुमने
किस्मत को बनाते हो, किस्मत से क्या मांगूं
सतराम-----

२. सतराम के साये में, दुनिया का प्यार मिला
मुझको ये परिवार मिला, ऐसा संसार मिला
तेरी भक्ती करता रहूं, हाथ जोड़ के ये मांगूं
सतराम-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “पापों, गुनाहों से दूर रहना भी पुण्य करने के बराबर है।”
- “अच्छे काम करने के लिये पैसों की कमी नहीं होती, काम करनेवाला सच्चा हो तो पैसा अपने आप आता है।”
- “नाम जपते जपते सोने से जीवन शुद्ध और विकार मुक्त हो जाता है।”
- “सतगुरु की सेवा करो क्योंकि उससे हृदय की मैल उतरती है और मन की चंचलता मिटती है।”
- “जो सुख के समय प्रेमी और दुख के समय धीरजवान बना रहे वही सच्चा भक्त या सेवक होता है।”
- “अगर शांति चाहते हो तो कर्म करके फल की इच्छा त्याग दो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३५)

थलु: तुंहिंजे नाम तां मां सदके
सबखे डिए थो सहारो
सतराम घोट तुंहिंजो, रहिड़की अजो शहर प्यारो
तुंहिंजे-----

१. डेवरीयूं तुंहिंजयूं सजायल हरको करे थो दर्शन
हिक वार जेको अचे थो, मन खे लगे सच्चो रंग
हैरत वजे थी घटिजी, अजब डिठो नज़ारो
सतराम-----

२. जे कई आ तुंहिंजी शेवा, श्रद्धा रखी त मन में
हरदम सुखी सो रहंदो, रखंदो न खोट मन में
इहो डिसो पोड़ मालिक, उनजो कंदो भलारो
सतराम-----

३. डेवयूं वडियूं सलामत, सभिनी जा कटनि थियूं दुखड़ा
मुश्किल में जेके हूँदा, वेंदा वठी से सुखड़ा
डेवयूं पहोतिल पीरन जूं, जंहिंजो अजब नजारो
सतराम-----

४. डेवरीअ वारा तूं हरदम, अहिड़ी डिजाएं का ताकत
केडी भी मुसीबत में, ईदो रहां मां तो वटि
जीअं राम खे अचे न, दुख, दर्द ऐं मुंझारो
सतराम-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३६)

तर्जः जाने क्यों लोग मुहब्बत किया करते हैं।
थलुः इन हवाओं में, इन फिज़ाओं में,
इन बहारों में, इन नज़ारों में,
मुझे सतराम ही सतराम नज़र आते हैं
दिन हो चाहे रात सुबह शाम नज़र आते हैं।

१. चारों दिशाओं से आवाज़ आती है
धुनी सच्चे सतराम की जब गाई जाती है
सुनता जमाना है, कहता दिवाना है
मस्ती में सब प्रेमी सांई सतराम गाते हैं
हर निगाहों में, धुप छांव में,
सच्च की राहों में, शहर गांव में
मुझको सतराम-----

२. मेरे इस जीवन में, घनघोर अंधेरा है,
उम्मीद का दीपक सच्चा सतराम मेरा है
बिगड़ी बना देगा, पार लगा देगा
इक बार जो देखे, सांई सतराम का जलवा
हर इक दुआओं में, हर सदाओं में
हर उमंगों में, सात रंगों में
मुझको-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

३. मायुस न होना, हर बात सुनता है
हर दिल में ऐ कुंदन, सच्चा सतराम रहिता है
हर दिल के अंदर है, मेरा मुक्कदर है
मेरे मनमंदिर में सच्चा सतराम रहता है
हर इरादों में, सब की बातों में
लिखा ये नाम है, सबके हाथों में
मुझको-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “किसी को दुःख ना दो, क्योंकि दुःख भोगने वाले का दुःख आगे चल कर चला जाता है पर साथ में दुःख देने वाले का सुख भी चला जाता है।”
- “नए साल की शुरुआत का मकसद है अपने विचार अच्छे करके संसार को अच्छाईयों और खुशियों से भरना।”
- “पीठ पीछे बातें करने वालों को छोड़ कर आगे बढ़ते रहो क्योंकि पीठ पीछे बात करने वाले पीछे ही रह जाते हैं।”
- “जैसे मजबूत जड़ों से ही मजबूत वृक्ष होता है वैसे ही श्रद्धा पक्की हो तो प्रभु प्राप्ति आसान होती है सो श्रद्धावान बनो।”
- “जैसे लकड़ी के टुकड़ों को जोड़ने के कई किस्म की चीजें बनती हैं वैसे आपस का मिलाप सब सुखों से बड़ा होता है सो प्रेम से रहो।”
- “पैसा खर्च कर के सत कर्मों से इज्जत शान मान बढ़ाओगे। पर कुकर्मों से इज्जत, इखलाक या किरदार यानी लक्षण या पात्रि गंवाओ नहीं।”
- “सच्चा मित्र पाने के लिए उसे ढूंढो नहीं पर खुद किसीके अच्छे दोस्त बन जाओ।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३७)

थलु: नाना तुंहिंजी नगरीअ में रूह खे राहत मिलंदी आ
डेवरी साहेब जे दर्शन सां, दिलड़ी साईं ठरी पवंदी आ
साईं --- महेर वसे थी दुनिया अचे थी
धाम चुमे थी तुंहिंजो , साईं सच्चा,
नाना -----

१. तुंहिंजे द्वारे ते हर कंहिंखे हिते मान मिलंदो आ
तूं आ दाता दानी वडो, हिते दान मिलंदो आ
साईं-----

२. आसूं पुजाइनि वारो सतगुरु , सभ सां करे थो भली
कारज सभ जा रास करे थो, जेको अचे थो हली
साईं-----

३. हर प्रेमीअ जे अंदर साईं तुंहिंजो नाम आहे
सभ ज्ञानीन जे मन में अंजुम तुंहिंजो ज्ञान आहे
साईं -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “मौत को हमेशा याद रखो पर उसके आने की चाहत न करो क्योंकि जिंदगी प्रभु को पाने का रास्ता है उस पर चलो।”
- “सतगुरु के प्यारे बनो क्योंकि सतगुरु की कृपा सब दुखों को दूर भगादेती है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३८)

तर्जः ज़रा सामने तो आओ छलिए
 थलुः सच्ची रहेड़कीअ जो सच्चो शान आ
 सच्चो सतराम ऐं कंवरराम आ
 गुरू शिष्य जी महिमा महान आ
 हिक विष्णु, बियो कृष्ण भगवान आ

१. बुरन सां भलाई सच्ची कमाई,
 सौदो सच्चो आ सतराम जो
 लखें करोड़नि हीरन जो मुल्य आ
 अनमोल दर सतराम जो,
 सच्ची-----

२. पर उपकारी सतराम सांईं,
 खिम्यागर सांईं कंवरराम आ
 पुज्य पितामह खोताराम जी
 वसंदी महेर जिते सुबह श्याम आ,
 सच्ची-----

३. दान दया जा सागर सांईं
 रंजीत दुनिया सलामी आ,
 लखे आसाऊं झोलीयूं भरीन था
 करोड़ें कबुली गुलामी आ
 सच्ची-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३९)

थलुः वरी मेला नसीबन जा, वरी मेला मुहब्बत जा
 पंहिंजे मन में मच बारे
 अच सच्चे सांईं जे द्वारे,
 इहे-----

१. प्रेमी प्यारा गौर सां बुध तूं
 श्रद्धा वारा गौर सां बुध तूं
 करे डेवरी वारे जो दीदार
 पंहिंजा हथिड़ा खणी तूं डेखार
 इहे-----

२. मुहब्बत जे सच्चे सांईंअ सां आहे
 प्रीत जे डेवरीअ वारे सां आहे
 अच सच्चे सांईं जे द्वार, थींदा बेड़ा तुंहिंजा पार
 इहे-----

३. रंजीत सागर सच्ची हिमथ डे
 सबखे महाराज सांईं चादर डे
 इहा रहेड़कीअ जी सरकार
 जिन सां मथे कयो संसार
 इहे-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(४०)

थलु: जनम जनम, में तुं मुंहिंजो सांई, मां दासी तुंहिंजी रहां
ओ मुंहिंजा सांई, मां तुंहिंजो सदाई, वचनन ते मां हलां
ओ हो हो . ओ -----

१. हर हिक जनम में तुंहिंजी शेवा करियां मां
कडहिं बुहारी, कडहिं पाणी भरियां मां
ओ मुंहिंजा सांई तुंहिंजे द्वारे मां शेवादारी रहां
ओ हो -----ओ मुंहिंजा -----

२. हर हिक जनम में तुंहिंजो सतसंग बुधां मां
सिदिक सचाई सबुर सिखां मां
ओ मुंहिंजा सांई तुंहिंजे सदाई चरणन में रहां
ओ हो -----

३. हर हिक जनम में तुंहिंजो नाम जपियां मां
सब जे अंदर में सांई, तोखे पसां मां
ओ मुंहिंजा सांई, मां तुंहिंजो सदाई दर्शन पसींदी रहां
ओ हो -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जैसे छप्पर मजबूत होने से घर वर्षा से बचा रहता है, ऐसे ही ध्यान करने से हमारा मन नफरत से खाली यानी बचा रहता है।”
- “संतों के शब्द सुनके उनपर अमल करने वाले दुखी से सुखी हो जाते हैं सो जो वचन सुनो उन पर अमल करो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(४१)

थलु: हिक आसरो आ तुंहिंजो
हिक आसरो आ तुंहिंजो
भला तोखां सिवाय सांई, बियो केर आहे मुंहिंजो
हिक -----

१. हिन पाप रूपी सागर खां पार लगाईदे
संसार जी लहेरून खां सतगुरु तूं ही बचाईदे
मुंहिंजी कस्ती पुरानी आ, मल्हार आहीं मुंहिंजो
हिक-----

२. आहे ओट अझो तुंहिंजो
कीअं बेदर बाडाय
छडे द्वारो तुंहिंजो सांई, कीअं बेदर वाछायां
जीअंदस मरंदस तो दर, सतगुरु तूं ही मुंहिंजो
हिक-----

३. तूं त प्रेम भरियो सागर, हिक बूंद जी मां प्यासी
दासन जे स्वासन में, तुंहिंजे नाम जो रहे वासो
बिना नाम न श्वास खणां
इहो अर्जु आहे मुंहिंजो
हिक-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(४२)

तर्जु: हमसफर मेरे हमसफर
थलु: सतगुरु मेरे सतगुरु तुझपे ही तो नाज़ है
काम कोई क्या करेगा, करता तु सभ कारज है
सतगुरु -----

१. लाखों है अहिसान तेरे, ना चुका मैं पाऊँगी
बहोत ही महिरबानीयाँ, ना भूला मैं पाऊँगी
तु दिलासा, तु है राहत, तु ही मेरा हमराज है
काम -----

२. मेरा राखा हर कदम पर, करता तू रखवाली है
जिंदगी की डोर सतगुरु, आज तुने संभाली है
तु है हिम्मत, तु है ताकत, तु मेरी आवाज है
काम -----

३. शेवा सिमरन और सतसंग ये सदा मिलता रहे
मन में मेरे ज्ञान दिपक, ये सदा जलता रहे
लाज सब की तू है दाता, सब के सिर का ताज है
काम -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “मन को सतगुरु के चरणों में लगाओ क्योंकि उससे मन की चंचलता दूर होती है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(४३)

तर्जु: हम, तुम युग युग ये ये गीत मिलन के गाते रहेंगे
थलु: रग – रग मुंहिंजी गुण गाइ तुंहिंजा
जाडे वजां मां जाडे वजां मां हरदम
ध्यान रहे हिक सतगुरु तुंहिंजो...
जाडे वजां मां जाडे वजां मां हरदम

१. आहे राह तुंहिंजी ते हलण कठनि
मुंहिंजा सतगुरु मुंखें बचाए तूं (२)
हिक रस्तो दुख्यो बियो पंधड़ो परे
मुंहिंजी बेड़ी किनारे लगाए तूं (२)
रग – रग -----

२. करे प्यार हिते हर कोई थो
पर विरलो तोड़ निभाए थो (२)
जो तुंहिंजो बणी, गुण गाए तुंहिंजा
सो हरदम खुशियूं मनाए थो हरदम
रग – रग -----

३. कर महेर मूँते मुंहिंजा सतगुरु तूं (२)
छल तोसां तोड़ निभायां मां
उथंदे – विहंदे, घूमंदे – फिरंदे दासी चवे
ध्यान रहे हिक सतगुरु तुंहिंजो
जाडे वजां मां हरदम -----
रग – रग -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(४४)

थलु: तुंहिंजी याद सताए , हर पल तड़पाए (२)
 पंहिंजी कृपा वसाए तूं
 सांई तुंहिंजो नाम मूंखां विसरे ना
 सांई तुंहिंजो नाम मूंखां विसरे ना

१. रोई रोई नेणनि मां , नीर वहायां मां
 हर पल सांई तोखे पुकारे , तोखे पुकाय्यां मां (२)
 दिल जी तूं सभ जाणी थो
 दिल जी तोखे मालूम आ
 आस इहा ही अंदर में आ
 सांई तुंहिंजो नाम मूंखां विसरे ना

२. जडहिं जडहिं तुंहिंजी याद अचे
 फानी हीअ दुनिया थी लगे (२)
 पल भर जो तू भरोसा नाहे
 तोसां मुंहिंजी रहजी अचे
 ऐबन हार आहियां , मां गुनहगार आहियां मां
 तूं त सांई बक्षणहार आहीं
 सांई तुंहिंजो नाम मूंखां विसरे ना

सच्चे सतराम ने कहा.....

• “कोई भी कार्य लगान और महनत से करें क्योंकि उससे सेहत,
 सम्मान व शक्ति हासिल होती है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(४५)

तर्जु: घर आया मेरा परदेसी
 थलु: रहेड़कीअ जे नंढे गोठ अची
 डेवरी डिसो सच्चे संतन जी

१. दुख नास थियन संताप सभे
 मन माग्यो फल तुरंत मिले
 सुरत डिसी महबुबन जी
 डेवरी डिसो-----

२. जिथे भरपुर भंडारो हले थो सदा
 जिथे गडिजी खाईनि शाह गदा
 खुश थियन रज लाए चरणनि जी
 डेवरी डिसो-----

३. सांई सतराम निष्काम हुआ
 हुई अमर शहीद ते संदन दया
 वरखा करे विया वचनन जी
 डेवरी डिसो-----

४. सदा रंग खे आहे आस इहा
 शल कंदा महेरबान मया
 डाति डींदा पंहिंजे दर्शन जी
 डेवरी डिसो-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(४६)

थलु: वारी वारी वजां पंहिंजे संतन तां मां
रहेड़की निवासी दुख हतंन तां मां
हतंन तां मां
वारी - वारी -----

१. याद कंदे दुख वजनि उडामी
भ्रम भुलावा वजनि उडामी
हिक चित थी हिक चिंतन तां मां , चिंतन तां मां
वारी - वारी -----

२. सेवा मां फल मिले थो सघेरो
कटिजी वजे चौरासीअ जो फेरो
निरबली बल वतन तां मां, वंतन तां मां
वारी - वारी -----

३. सुहिणी सुरत मुहिणी मुरत
हर हंधि परघट अहिडी किरत
मन मोहन मन महंतन तां मां महंतन तां मां
वारी - वारी -----

४. सदा रंग सिरि सतराम संभारे
शाल मरा मां अमर उचारे
पोड़ मिलां पंहिंजे संतन सां मां, संतन सां मां
वारी - वारी -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(४७)

थलु: दिल चाहे दिल चाहे, रहेड़कीअ वारा
हीउ साह भी सदके सतगुरु तां (२)
मुंहिंजी जान भी सदके सतगुरु तां

१. आसमान खां ऊचो शान तुंहिंजो
आहे समुंड खां गहिरो ज्ञान तुंहिंजो
डे ज्ञान पीरी मां त मस्त रहां, जे कुर्ब करी, रहेड़कीअ वारा
मुंहिंजी जान -----

२. तुंहिंजे अखिड़युनि में इसरार डिठो
मुंखां विसरी सजो संसार वियो, पल पल तुंहिंजा दर्शन पायां
ना दिल भरजे रहेड़कीअ वारा
दिल -----

३. सुरज थो रोज सलामी भरे
लहे जडहिं मुंझो थो रहे
सारी रात रोई इंतजार करे, दीदार घुरे रहेड़कीअ वारा
मुंहिंजी जान -----

४. तो जबल जंगल आबाद कया
जंहिं जाए ते तव्हां जा पेर पया
सां धरती थी त सुरहाण आ,
पई खुशीयूं करे, बि रहेड़ीकअ वारा -----

५. दासी खे कडहिं ना धार कजो
सदा पंहिंजे चरनन जो प्यार डिजो
आहे आश इहा शल दम निकरे, तुंहिंजे चरणनि में
रहेड़कीअ वारा , दिल चाहे -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(४८)

थलु: मेरी जिंदगी का मालिक सतराम सखी सच्चा है
जैसे भी तु चलाए, उसमें तेरी रजा है

१. जो कुछ भी मैंने मांगा, हरदम तुने दिया है
कर एक और कृपा, चरणों में सांई जगह दे
मेरी-----

२. जब तक रहूं जहाँ में, रखना अपनी पनाह में
दुखियों का है सहारा, मुझको भी आसरा दे,
मेरी-----

३. शक्ति दे मुझको ऐसी, राजी रहूं हर हाल में
बीते ये मेरी जिंदगी, तेरे नाम के सहारे
मेरी-----

४. पूरी तू कर दे आस, मांगे तेरा ये दास
सांई आज देदे दर्शन, ये मेरी इलतजा है
मेरी जिंदगी का मालिक-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जैसे एक बूंद से तालाब भर जाता है वैसे एक गुण धारण करने से इंसान धर्मात्मा बन जाता है।”
- “दुखी से पूछने जाने और उसे धीरज या सांत्वना देने से अपने ऊपर आनेवाले दुख मिट जाते हैं। सो दुखियों को सांत्वना देते रहो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(४९)

तर्जु: तेरे मस्त मस्त दो नैन (दबंग)
थलु: रहेड़की वाले मुझे तेरा ही सहारा
इस भरी दुनिया में कोई ना हमारा
इस भरी दुनिया में कोई ना हमारा -
मुझे अपना बना लो राम,
मेरे सांई सच्चे सतराम (२)

१. तेरा ही सिमरन, सांई मेरी जिंदगी है
तेरी ही पूजा सांईअ मेरी जिंदगी है
तेरी ही पूजा सांईअ मेरी जिंदगी है (२)
मुझे अपना-----

२. तेरी दया का सतगुरु, मैं हूँ भिखारी
तू ही मेरा सांईआ बड़ा उपकारी (३)
मुझे-----

३. दर पे खड़ी हूं सतगुरू लिये अपना दामन
रंजीत सागर का है सच्चा सांई जामिन
मुझे-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “नाम पाने से सुख, बल व ज्ञान की प्राप्ति होती है, सो नाम जपो और सुखी रहो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५०)

थलु: कीअं प्रतीम खे परचायां, कीअं साईं खे सरचायां
मां त बिल्कुल लायक नाहियां (२)
कीअं -----

१. करम न जाणां, धर्म न जाणां
मालिक पोइ कीअं सहंदुसि माणां
मां वेठी पूर पचाया, अला मां वेठी
मां त बिल्कुल -----

२. पापन जी जडहिं पोथी पटींदा
वेझो वेहिण मूंखे मूर न डींदा
मां डोह बंदियूं बक्षाया, अला -----
मां त -----

सलोक

३. भलो ... साईं शल तोखे पवंदम बाझ, हाय राम ---
अझो अथम आसरो, मुंहिंजी झुगी झले थी न सी --
नालाइन जा लतीफ चवे साईं हाल तूं मुंहिंजो ही
हाणे ढोला ढकणो थी साईं. तूं हिन मंदायुनिइन जो

४. गणतीन मां पहिलाज न वटिबो
कदमन में वजी सिर खे सटबो
बी कहिडी कार कमाया, आला -- बी कहेडी ----
मां त बिल्कुल -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५१)

थलु: वसे रहेडकीअ में राणो, मुंहिंजो साईं सच्चो सतराम
जेके दर ते अचन सुवाली, थियन पूरन तिन जा काम
वसे -----

१. तुंहिंजे दर ते अची मां रहां, तुंहिंजा दर्शन दिल सां कयां
पी अमृत मां तुंहिंजो, तुंहिंजो नारो दिल सां हणां
वसे -----

२. करे डेवरीअ जो दर्शन, करियां पंहिंजो मन प्रसन्न
धरियां ध्यान तुंहिंजो हरदम, डयो भगतीअ जो साईं दान
वसे -----

३. आहे पर उपकारी जवान, कंदो सब जी भली सतराम
करे रहिमत थो सब ते, इहो घोट अथव घनश्याम
वसे -----

४. दास दर जो मां आहियां, तुंहिंजी महिमा वेठो गायां
धूणी मस्तक ते लायां, आहियां चरणन जी मां गुलाम
वसे -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “प्यार और मुहब्बत लेने और देने वालों का खुशियों से भरती है सो जीवन में प्यार दो और मुहब्बत लो।”
- “बच्चों को शिक्षा दो क्योंकि तालीम एक ऐसा फूल है जो जितना ज्यादा खिलता है उतना ही ज्यादा खूबसूरत व खुशबूदार होता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५२)

थलु: चल मलंगा चल, चल मलंगा चल,
चल मलंगा रहेड़की द्वारे चल
दर्शन कर सतराम दा, दर्शन कर सतराम सखी दा
दुखणे जावे टल, चल ----

१. जेडा भी इस दर पे आवे, खाली इथों मूर ना जावे
रहिमत साईं सतराम सखी दा आ, वसंदी आ हर पल
चल मलंगा-----

२. सतगुरु मेरा रोग मिटावे, सोए मुकदर भाग्य जगावे
शेवा करंदा जेणा इथे, मुश्किल जावे टल
चला मलंगा -----

३. रहेड़की साहेब दी शान निराली
महिमा इस दर दी है प्यारी
अंजुम जप तूं नाम साईं दा, दुखणे जावे टल-----
चल -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “बिना अमल के ज्यादा ज्ञान से , अमल वाला थोड़ा ज्ञान से बेहतर होता है, क्योंकि अमल से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है।”
- “सुख के सब साथी होते हैं पर जो सुख और दुख हर हाल में साथ निभाते हैं वो सच्चे साथी मित्र होते हैं।”
- “ध्यान से मन और दान से धन पवित्र होता है। सो ध्यान और दान करते चलो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५३)

थलु: मैं सच्चे साईं देलड़ लगीया , मेरे तो गम परे रहंदे
मेरी जिंदगी को रहिमत दे, मेरे तो गम ---

१. कभी भी लोड़ नहीं पहेंदी, मैनु दर दर ते मंगने दी
मैं सच्चे साईं दी मंगदी आ, मेरे तो पल्ले भरे रहंदे
मैं-----

२. सच्चे साईं मेरे नाल, हर वेले राजी रहेंदे ने,
जिन्हा दे साईं राजी रहंदे, वो जिवदे हि तर जांदे
मैं-----

३. सदा दर दी दासी रहाँ, इहो ही साईं कर्म करो
कहे रंजीत सागर भी, मेरे तां भाग खुले रहंदे
मैं सच्चे -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “प्यार मोहब्बत, दयालुता, रहमदिली की भाषा/ बोली ता बहरा भी सुन सकता है और अंधा भी देख सकता है। सो प्यार की बोली बोलो।”
- “प्रभु या सतगुरु का ध्यान करो क्योंकि उनका ध्यान करने से मस्तिक में ज्योति प्रकट होती है और अज्ञान का नास होता है।”
- “दुसरों के दोष, खराबियां या ऐब निकालने से और उनकी आलोचना करने से वो दोष अपने अंदर आ जाते हैं। सो परदोष आलोचना से दूर रहें।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५४)

थलु: ज़िंदगी गुज़ारियां सांईं तुंहिंजे संग में
 सच्चो डेई ज्ञान रंग पंहिंजे रंग में
 दुनिया जा सुख विसरी वजनि.....
 तुंहिंजो रहे वास मुंहिंजी रग – रग में

सतराम सांईं तो लाए जियां थो, हथिड़ा जोड़ेमिनथ कयां थो
 मूँते महेर कर ओ नाना सांईं, अहिड़ी नजर धर सतराम सांईं
 ज़िंदगी-----

१. हर कम कयां तुंहिंजे नाम सां शुर्
 दुख सुख में मां तोखे भायाँ रूबरू
 तुंहिंजी वठी ओट पियो जींआं जग में
 तुंहिंजो वास रहे मुंहिंजे अंग अंग में
 सतराम सांईं तो लाइ -----

२. जेसीं तांईं तुंहिंजी आ निगाह सतगुरु
 तेसीं तांईं नाहे परवाह सतगुरु
 दिल तां भुलायाँ जडहिं तात तुंहिंजी
 ज़िंदगी जी आखिरी आ रात मुंहिंजी
 सतराम -----

३. दासी आहियां मां, तुंहिंजे आसरे सदा
 दिल ता कयो मुंखे कडहिं न जुदा
 शेवा करे ज़िंदगी हीउ सफल कयां
 तुंहिंजे सच्चे ज्ञान ते मां अमल कयां
 सतराम-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५५)

तर्ज: तुम्ही मेरे मंदिर, तुम्ही मेर पूजा
 थलु: घुरां महेर तोखां मां, परे ना थियां मां
 सांईं तुंहिंजे दामन में हरदम रहाँ मां

१. तूई आ मुंहिंजी मंज़िल, तूई आ किनारो
 तरे पार पवंदस जे , थी पए इशारो
 छाया में अव्हांजे हरदम रहाँ मां
 घुरां-----

२. कयां मां भलायूं अहिड़ो मूंखे चाह डे
 मुंझाए जे दुनिया हीअ, रखजाए पनाह में
 दुखायां न कंहिं खे मां, सबकुछ सहां मां
 घुरां-----

३. करे कुरब ऐडा, मतां तूं भुलाई
 डिसी डोहनि मुंहिंजनि खे, छडे न डिजाएँ
 छाया में अव्हांजे हरदम रहाँ मां

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जबान पे लगा हुआ घाव जल्दी भर जाता है पर जबान से दिया हुआ घाव मुश्किल से भरता है सो जुबानी घाव किसी को न दो।”
- “नाम से मन को साफ करो क्योंकि सर्व पापों की जड़ मन मानी है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(५६)

तर्जु: ज़रा सामने तो आए छलीए
थलु: मुंहिंजा सतगुरु सच्चा सतराम तू,
हुए निरइच्छा निष्काम तू
जंहिंखे दामन में आंदो राम तू,
तंहिंजा कटिया कलेश मदाम तू

१. शरण पए जे लाज रखण जो बेशक भार उठायो तो
पापीयुनि पलीतन दोहिन जो भी बेड़ो पार कयो तो
करियां तो दर वेठो अरदास मां
दिलगीर दिल खे कयो शाद मां, कयो फिटल खे आबाद मां
कीअं छडीं दे शरण आए श्याम तू

२. कंवर मां तो कंवल उपायो, सिर जीवन डेई अमर बणायो
हिंद सिंध जो तो शान वधायो, जान जिगिर खे शहीद बणायो
कहिड़ी ताकत कलम खे आहे, जेका अलख की कख बुधाए
पर केर उमंग खे हटाए, जेको मुहिब पीयारियो जाम तू
मुंहिंजा-----

३. डेवरी साहेब आशवंदन जी आ, रास करे कम खिन पल में
सहायता करे हिन विपत काल में, औखी हिन हलचल में
सदा रंग रंगीअ खे दियाए, दिस मन मांगिया फल पाए
हिन वक्त खेन आजमाएं, जेको मुहब पीयारियो जाम तू
मुंहिंजा-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(५७)

थलु: मेरी झोपड़ी के भाग आज खुल जाएंगे,
सांई आयेंगे, आयेंगे, सांई आयेंगे,

१. सांई आयेंगे तो आंगन सजाऊंगी
केसर चंदन का तिलक लगाऊंगी
मेरी किस्मत के ताले आज खुल जाएंगे,
सांई आयेंगे-----

२. सांई आयेंगे तो पलना झुलाऊंगी
दिप जलाके मैं दिवाली मनाऊंगी
सांई सतरामदास झोली भर जाएंगे
सांई आयेंगे-----

३. सांई आयेंगे तो खुशीयां मनाऊंगी
मैं भी नाचूंगी और सबको नचाऊंगी
मेरे मन में उमंग आज भर जाएंगे,
सांई आयेंगे-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “पुरुषार्थ करो क्योंकि पुरुषार्थ से इंसान की किस्मत खुलती है और खुशियां आना शुरू हो जाती है।”
- “अपने अंदर किसी को भी दुख ना देने का भाव रहने से अपने ऊपर आने वाले दुख मिट जाते हैं।”
- “गलती से भी बड़ी खराबी वो होशियारी है, जो गलती छिपाने में इस्तेमाल की जाती है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५८)

थलु: अव्हांजा प्रेमी हजारे आहिनि,
असांजी शेवा कबुल पए शल
असूल खां आहियां अव्हांजो बाणो
अंगण बुहारी कबुल पए शल
अव्हांजा-----

१. सच्चा साईं अव्हांजे हथ में
नसीब आहिनि गरीब जन जा
जुड़े जिगर ऐं सडे पई सिक में
हीउ दिल वेचारी कबुल पवे शल
अव्हांजा-----

२. रंगी डिठा मूंरंग केई, रहेड़की तुंहिंजी कमाल आहे
कयां गुलामी तो दर मां साईं
इहा सलामी कबुल पए शल
अव्हांजा-----

३. तुंहिंजे नाम जो नौकर जमानो, खुलियल आ साईं महेर जो खजानो
रंजीत जी आ निमाणी अर्जी, तो दर सच्चा साईं कबुल पए शल
अव्हांजा प्रेमी-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५९)

थलु: आहे कबुली, तुंहिंजी गुलामी, रहेड़कीवारा
तुंहिंजी डेवड़ी, ते प्यारा डेवरीअ ते मां
सिरडो निवायां मां रहेड़कीअवारा

१. तुंहिंजी डेवड़ीअ जो दर्शन पायां
दुख दर्द मां पंहिंजा मिटाया
दुखड़ा सभिनीजा दूर कजाएं अची रहेड़कीअवारा
तुंहिंजी-----

२. तुंहिंजी डेवरी में मोती मणियां
जंहिंखे निमे थी सारी दुनिया
आसूं सभिनी जूं पूरियूं कजाएं अची रहेड़कीअ वारा
तुंहिंजी-----

३. आहे दास निमाणो तुंहिंजे दर जो
अची सवाल अघाए मुंहिंजो मन जो
सुवाल सभिनी जा पूरा कजाएं अची डेवरीअवारा
तुंहिंजी-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “दिन का वक्त रोजगार करने और रात के वक्त रोजी देने वाले को रिझाने वाले या सिमरण करने वाले इस लोक में सुख और परलोक में परमात्मा को पाते हैं।”
- “निंदा जैसे दूसरों की इज्जत को हनि पहुँचाती है, वैसे निंदा करने वाले का भी शान मान खो जाता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(६०)

थलु: सबखे बुधायां धुनी साहेब थी घर में घुरायां
घर खे सजायां, धुनी साहेब थी घर में घुरायां
छो न बुधायां मां बुधायां,
धुनी साहेब थी घर में घुराया

१. गुलन फुलन जी सेज सजायां, सेज सजाये ज्योत जगायां
ज्योत जगाये, आरती गायां, पाठ रखायां
धुनी साहेब-----

२. अखंड धुनीअ जो पाठ रखाए, रेशम जा रूमाल चढ़ाए
अखंड भंडारा खूब हलाए, भाग बणायां
धुनी साहेब-----

३. धुनी साहेब जंहिं घर में अचे थी, स्वागत में सारी संगत नचे थी
दुहल वजन शहनायूं वजन थियूं, मौज मचायां,
धुनी साहेब-----

४. कुंदन साथ संगत खे घुराए, सतसंग जो आनंद वठराए
सांई सतराम जी महिमा गाए, भोग पारायां
धुनी साहेब-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(६१)

थलु: भोग साहेब पियो आ, अजुत धुनी साहेब जो
जाप हली रहियो आ, सच्चे सतराम जो
अछु चादर विछायो वाह सांई वाह
सब गुल विछायो वाह सांई वाह
परसाद विरहायो वाह सांई वाह
सब ताड़ियूं वजायो वाह सांई वाह
अचो झूमो नचो सब गायो
भोग साहेब-----

१. धुन दुल्ह दरवेश जी, मुख वाणी कंवरराम जी
प्रेमियुनि पढ़ी प्रेम सां धुनी राम नाम जी
परसाद विरहायो-----

२. सुहिणी सुहिणी सेज ते, धुनी विरजमान आ
पाण सतराम वेठो पाण भगवान आ
अछु चादर-----

३. कुंदन धुनी साहेब आ, प्रेम सां जंहिं बि पढ़ी
सुखन में हुंदो सदा, दुखन जी न ईदी घड़ी
अछु चादर-----
प्रसाद विरहायो -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(६२)

तर्जः तेरे मस्त मस्त दो नैन (दबंग)

थलुः दुःख में न घबराना , तुम हिम्मत न हारना
साथ देगा रहेड़कीवाला, दिल से पुकारना,
साथ देगा -----
जब कोई न हो अपना, सतराम नाम जपना
सतराम नाम जपना, जब कोई न अपना

१. दुनिया सारी ने है , आजमाके देखा
पल में मिटा देता है, दुःखों की ये रेखा
तुम भी शरण में आके, जीवन गुज़ारना
साथ -----

२. करता है पूरी सबकी, ये तो मनोकामना
सुनता है सच्चा साईं, सबकी प्रार्थना
काम है इसका सारे जगत को तारना
साथ देगा -----

३. प्रदीप प्यासी सुखी जीवन जो चाहो
साइलराज सच्चे साईं की शरण में आओ
तुम भी यहाँ आके अपनी बिगड़ी सँवारना
साथ देगा -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(६३)

थलुः तुंहिंजो मेलो बुधी असां घर में कींअं साईं विहंदासीं
असां शेवा करण लाइ पेरे उघाड़ा ईदासीं

१. तूं जे घुराई साईं मेले तुंहिंजे ते अचिबो
नानो घोट आ कहिड़ी खोट आ, नारा हणी साईं नचिबो
पाए पांदु गिचीअ में, पैदल साईं तो वटि ईदासीं
असां-----

२. हिंद सिंध खां सभ ईदा प्यारा, नाने साईं जा लगंदा नारा
हिक बिये खे सभु डींदा वाधायूं, धाम तुंहिंजे खे साराइंदा
तुंहिंजे दर ते बसयूं ऐं कारियूं भरे सभु ईदासीं
असां शेवा-----

३. आदेश बुधी मन प्रसन्न थींदो
रूप हजुरी दर्शन डींदो
खाली हितड़ा केई न वेंदो
नानो साईं झोलीयूं भरींदो
हितां सुखनि जूं झोलियूं भरे सभु वेंदासीं
असां शेवा -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(६४)

थलु: कंदो आ कंदो आ रहिमत कंदो आ
साई सच्चो सतराम, पाण आहे भगवान
कंदो आ-----

१. जंहीं सिक सां अची धुनी साहेब पढी
कटिजी वई उनजी दुखड़नि जी घड़ी
जेके आया सुवाली से विया भरजी
जंहीं नालो जपियो सतराम
कंदो आ -----

२. जंहीं श्रद्धा रखी से, अघजी विया
सच्चे साईअ जे रंड में प्यारा रंडजी विया
जेके आया कुंवारा से मंगजी विया
जंहीं गुरु कयो साधराम
कंदो आ-----

३. हिन दर जी मिठा जेको शेवा कंदो
कटिजी वेंदो उनजो चौरासीअ जो फंदो
डुखियो डीहं संदेश पोड़ कडहिं न डिसंदो
जंहीं शेवा कई निष्काम-----
कंदो आ-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(६५)

थलु: गोद पंहिंजी तूँडे, साई सतराम
गोद -----
मां तुंहिंजे दर ते आयुस, हो हो -----
मां तुंहिंजे दर ते आयुस, महेर पंहिंजी तूँडे
साई सतराम -----
गोद -----

१. मूं में मंदायूं करोड़े आहिनि, पर तुं बक्षणहार आहीं
ऐब ढके मूं निमाणीअ जा साई, तूँडीदो आधार आं
मूं दासीअ ते तूं पंहिंजी दयाजी, हिकड़ी नज़र धरे
साई सतराम, गोद पंहिंजी तूं-----

२. मुंहिंजा कर्म कटींदे दाता, शक्ती डिठी आ तो में
तूंही अंदर जा हाल जाणीं थो, भक्ती सच्ची आ तो में
मूं दासीअ -----

३. लायक न आहियां, पंहिंजे चरणनि जे लायक बणायो
रंजीत चवे अंधियारे जीवन खे रोशन बणायो
मूं दासीअ -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(६६)

तर्जः कहो ना प्यार है
थलुः सांई विस्पत जी रात आ,
सचखंड खां आई बारात आ
सच्चे सतराम जी (२)
रहेड़कीअ जे हरपासे रहिमत जी बरसात आ
सच्चे सतराम जी -----

१. सांई विस्पत जी रात हुई, पीरन जो पीर आयो
घोट सखी खोताराम जे घर बालक आ अहिड़ो जायो
केडी प्यारी, भागनवारी, हर रंग भरी, अजु रात आ
सच्चे सतराम जी -----

२. सुहिणी डेवड़ी साहेब ते, गुलन जी बरखा थींदी
तंहिं डेवड़ीअ जे दर्शन लाइ, कायनात अजु ईंदी
सुहं वारी, सोभारी सतगुरुन सां भरी सौगात आ
सच्चे सतराम जी -----

३. रहेड़कीअ में सांई जनम वठी, डेवड़ीअ में विश्रामी
कुंदन रहेड़कीअ साहेब अची, हरको भरे सलामी
मची मौज चौधारी, आई घड़ी प्रभात आ
सच्चे सतराम जी -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(६७)

थलुः हले थी शेवा १२ ही महीना,
रूगो रहेड़की अचण जी
मायुस छो आ, छा जे लाए,
रख नाने ते लाहे पाए
निरइच्छा, निष्कामी बणजी,
करीं त शेवा करण जी कर
हले थी -----

१. छा मां बधायां शेवा जो शान आ
जग में मथाऊं शेवा जो माण आ
शेवा में गुंगें वांगुर गुजारे, चवे जो कोई सहन जी कर
हले थी -----

२. सच्चो जे थींदे तूं शेवादारी, सुखन में हुंदय उग्र ही सारी
सतराम नालो सुखन जो सागर, चाहीं जे सुखड़ा, जपन जी कर
हलीं थो -----

३. शेवा में आहे शक्ती समायल
शेवा जा गुण इन सभिनी जा गायल
शेवा में कुंदन तूं दास बणिजी, इहो ही नारो हणण जी कर
हले थी -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(६८)

तर्जः मौसम की तरह तुम भी बदल तो ना जाओगे
थलुः बादशाह आहे, शहंशाह आहे,
सभ संतन जो सिरमोर आहे
एस.एस.डी आ नं. १ भली जग जाचे डिसो
अवतार ईश्वर जो आहे,
सच्चो सतराम सच्चो आहे
क्योईश्वर पाण ऐलान, भली जग जाचे डिसो
एस.एस.डी आ नं. १ -----

१. बियन जे भले लाए, पुटड़ा, केर डींदो आ घोरण लाए
माफ करे थो खताऊँ, जेको अचे थो पिणण लाए
महेरबान आहे, दयावान आहे,
सुहिणी रहेड़कीअ जो भगवान आहे
अवतार ईश्वर जो आहे -----
कंदो अहिडी सखा नाहे केर, भली जग जाचे डिसो
एस.एस.डी आ -----

२. हिन सृष्टी ते आयो, जमदे जाम थी आयो
रोशन थी सारी दुनिया, रहेड़की खे वैकुंठ बणायो
डेवरी साहेब जो आला शान आहे

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सच्चो सतराम साईं महान आहे,
अवतार ईश्वर -----
नाहे हिन जे कोई मट साणी, भली जग जाचे डिसो
एस.एस.डी आ -----

३. सखी सतराम जहिडो जग में, कोई नाहे सखी प्यारा
मिलंदइ न हिनजी मिसाल पुस्तक पढ़ी डिसु प्यारा
हिन खां वध अंजुम न कोई दानी आ,
डिनी त कंहिं कुरबानी आ,
दुनिया जेसीं हलंदी, हीअ कहानी पई हलंदी
डिनी डंड मेनाहे कहे न्यानी, भली जग जाचे डिसो
एस.एस.डी आ -----

सच्चो सतराम ने कहा.....

- “धन जाये तो कोई हानि नहीं होती पर वृत्ति, अमल या संग,
को कभी खराब न होने दो।”
- “हर अच्छे पेड़ की तरह जिसे चाहे पत्थर मारो या कंकर, फल
हमेशा अच्छा ही देता है। वैसे ही अच्छे बनकर हर हाल में
अच्छाईयां ही बाँटे।”
- “सतगुरू को हमेशा अपने साथ रखने से कोई भी गलत काम
नहीं होता है सो हरदम , हर पल सतगुरू को साथ लेकर चलो।”
- “नाम सिमरण करो क्योंकि नाम सिमरण से दुख दर्द व पाप
नष्ट होते हैं।”
- “सतगुरू पे विश्वास रखो क्योंकि जिनको सतु का सहारा रहता
है उन्हें लोक परलोक में कभी दुख नहीं रहता।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(६९)

थलु: सांई सतराम नालो दुखन नास आ
पूरी पक्की जन मथन आस आ
सांई -----

१. अमर ओट वरती लगापा छडे
छडियाअ से हिकदम अडे ऐं गडे
रहियो दम पिछाड़ी ताई दास आ
सांई सतराम -----

२. कच्चा साथ जीअरे छडीन था कटे
सच्चन संग सचपच मोटे ना मिटे
जिनि इम्तहान अहिडो कयो पास आ
सांई सतराम -----

३. डोहनि डोह बक्षण बुरनि सां भलो
दया सां सुकल कनि था साओ सलो
मिस्कीनन ते संतन सदा क्यास आ
सांई सतराम -----

४. सदारंग रहु तूं सदा बेफिकर
संदन नाम संदो कंदो रह जीकर
त कटिजी वजई ही जनम फास आ
सांई सतराम -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(७०)

तर्ज: तन डोले, मेरा मन डोले
थलु: पार कंदे सतराम स्वामी हिन बेड़े खे पार
भार संभारिज सिंध सारीअ जो (हरदम तोते भार) (२)

१. ओट अमर खे हुई अव्हांजी भरवसो भारी
बीज जे चंड्रजियां वयो वधंदो, (साहिब सतारी) बाबा
हुयो सदके सच्चो बणायो किन कच्चो
तडहिं पाताई फल चार, हिन बेड़े -----
पार कंदे -----

२. वेल विहामी नाहे सुआमी, अजां बि आहे तो हथ
कयो महेर मिस्कीनन ते बाबा सरब कला सिमरथ (२)
रहु निश्चिंता मुंहिंजा परमपिता, इहा तो दर आहे पुकार
हिन बेड़े खे पार -----
पार कंदे -----

३. दिनन खे दर तो बिना सतगुरु कोन्हे बियो चाढ़ो
विषय विकारन सोघो कयडो (जकड़े जीअं सारो) (२)
कयो कोप खतम रख लाज शर्म अच निरधारन आधार
हिन बेड़े खे पार -----
पार कंदे -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

४. सदारंग शरण आयल खे रख, रंग अंदर राणा
अथियणी मां कंदड़ थी आहियो बदलींदड़ भाणा
सिक डियो सफा ऐं निश शिर नी सफा
संतन संदी पचार हिन बेड़े खे पार
पार कंदे -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “आलोचना से घबराकर कार्य न छोड़ दो पर उन पे गौर करो क्योंकि आलोचक के कहे हुए विचार सफलता में सहायक बन सकते हैं।”
- “दूसरों के काम आने से अपने काम अपने आप बन जाते है, सो सबसे अच्छा व्यवहार करो।”
- “हकीकत में नाम ही अमल और सच्चा धन है और वही पूंजी अंत तक साथ देगी।”
- “दूसरों को उनकी खामियों, गलतियों पे डांटने और समझाने से अच्छा है अपनी खुद की गलतियों को संवारो और सुधारो।”
- “मालिक से मिलने का रास्ता है उसके प्यारों से मिलके उनके बताए हुए रास्ते पे चलना।”
- “दुःखों से वित्ति / छुटकारा पाने का एक ही उपाय है पवित्र जीवन बिताना सो पवित्र जीवन बिताओ सदा सुख पाओ।”
- “बिना अमल के ज्यादा ज्ञान से , अमल वाला थोड़ा ज्ञान से बेहतर होता है, क्योंकि अमल से ही ईश्वर की प्राप्ति होती है।”
- “परेशानी की हालत में किसी से मजाक नहीं पर हमदर्दी करो क्योंकि इसे रिश्ते मजबूत होते हैं।”
- “पशुओं को नहीं अपने अंदर बैठी पशुता को खत्म करो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(७१)

तर्जः पंख होते तो उड़ आती रे
थलुः असां छो न चऊं दुनिया खे ,
असां डिठो सच्चो सतराम आ
अवतार गुरूअ जो आहे

१. डेई चोट नगारे ते चवंदासीं, पोइते मूर न पवंदासीं
महिमा पंहिंजे सतगुरु जी , हित हुत वेही चवंदासीं
डिनो इशारो हीअ भगवान आ,
अवतार गुरूअ जो आहे
हो हो ----- असां छो न -----

२. घुमिण वजूं था गडु हले थो, सुमंदे उथंदे साणु रहे थो
रातां डींहां गडु रहे थो, सुबुह सांझी सार लहे थो
डिनो इशारो -----
असां -----

३. हाज़िर नाज़िर हरी डिसे थो, कडहिं बुरायूं कीन कंदासीं
भुलुं अचानक थी बीवजनि, भुलुं बदियूं बक्षाइंदासीं
डिनो इशारो -----
असां -----

४. सुंगध चंदन लाहींदासीं, सतगुरू खे त मजाईंदासीं
धुनी सच्चे सतराम वारी, रोचल गडिजी गाईंदासीं
डिनो इशारो -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(७२)

तर्जः ज़रा सामने तो आओ छलिए
थलुः हिन रहेड़कीअ में वडो राज थी
हिते रूप रहे परमात्मा
हिते पूरी थिए सभ जी आस थी,
इहा सभ जी चवे थी आत्मा

१. छा जूंदवाऊं, छा जूंगोरियूं, धुणीअ सां सभ दुख दू थियनि
बाणी जंहिंजी आ बलवारी, कष्ट सभेई काफूर थियनि
पोड़ छो न अचां अधरात मां, हित रूप रहे -----
हित पूरी थिए -----

२. सुई जे पारो सगड़ा सांई जा , प्रेम रखी जेको पाये थो
रखया पाइनि सां रोग मिट नि था, दाता दर्द मिटाए थो
लहूटी थी लाट मां, हित रूप रहे परमात्मा
हित पूरी थिए -----

३. देवड़यूं सांई जूं पीड़ा खे पूरे, सुख जो साह खणार्इनि थियूं
कष्ट कटे पूरे शरीर जो, नओ निरो लो बणार्इनि थियूं
पोड़ छो न अचां डीहं रात मां, हित -----
हित पूरी थिए -----

४. अमृत सांई जो असुल खां आहे, गंगाजल खां वध प्यारा
पीअण सां जागे प्रेम अंदर में
बियाई खे बाहेर बध प्यारा
धनवाणी थी धरमात्मा, हित -----
हित पूरी थिए -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(७३)

थलुः हिक नानो राजी हुजे, सच्चे सांई जूं भलाईयूं
हुजनि त बेड़ो पार आ (४)
महेर सच्चे सांई जी हुजे, सच्चा सांई दर्शन डियनि
त बेड़ो -----

१. कंवर खे जीं अं पंहिंजो बणायो, कोहरी मां जंहिंखे जोहरी बणायो
अहिड़ी शेवा प्यारा कजे, सच्चे सांई अं जूं भलायूं हुजन
हिक नानो -----

२. अविखीअ वेले में थिए थो सहाई
दर आये जी करे थो सणाई
सच्चे सांई जी दामन हुजे, सच्चे सांई जूं भलायूं हुजन
त बेड़ो -----
हिक नानो -----

३. करोड़े आहिनि दर जा दिवाना
खुलियल महेर जा आहिनि खज़ाना
साण रंजीत नानो हुजे, सच्चे सांई -----
त बेड़ो -----
हिक नानो -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(७४)

तर्जु: ज़रा सामने तो आए छलिए
थलु: बिज पोख्यो सांई खोताराम हो
वधाए, दरख्त सच्चे सतराम कयो
जंहिं मां अमर रूपी फल बणिजी,
सहेसी श्रद्धालु सुखधाम थियो

१. हित मिलेई साई उजूरो, जहिड़ा कर्म हित कबा भाई
बिना कियेकुछ थिए न प्राप्ती, साख डियनि था सब कढाई
बिना किए मिले ना मजूरी, तोड़े सहेसी हिला हलाई
कडहिं किए बिना न चारो चले,
बिना कोशिश न कोई नाम थिए
बिज -----

२. अहिड़ो समो मोटी न मिलंदुई पोइ चुकी बाज़ी हारी
करे मुहब्बत सतपुरूषनि जी, खटे वज्रज बाज़ी सारी
हीउ ध्यान संदो वझ आ बणियो बेशक हिंसा हंज आ
रखी वेसा हलायो वंझ आ, तरी निहकामी निश्काम थियो
बिज -----

३. रहेड़की वारे राणल जो आहे, भरवसो मूंखे भारी
राणल तुंहिंजी जुदाई में आहे, दुखी इहा विश्व सारी
सदांग संदो ही हा, सच्चे संत कयो आ बहार
हाणेजम खेकहिड़ी मजाल, लथोखुटको पूोविश्राम थियो
बिज -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(७५)

तर्जु: शिर्डी वाले सांईबाबा
थलु: सारे जग में तुंहिंजी हाक बुधी आ
कंदो आ सणाई, अहिड़ी साख बुधी आ
आहे शाहं जो शाह तूंसांई
बिगड़यिल बाज़ी सभजी बणाई
रहेड़कीअ वारा, सतराम प्यारा
मूंभी तो दर झोल फैलाई
पूरा करे थो सुवाल सभिनीजा, महेर कंदे
थींदी सभजी सणाई
झोल फैलाई, ओ झोल फैलाई-----
रहेड़कीअ वारा -----

१. तुंहिंजे आधार आहियां, मां तुंहिंजो बार आहियां
तूंमुंहिंजो खालक आहीं, मां तुंहिंजो बालक आहियां
मुंहिंजो न कोई वसीलो, मुंहिंजो तूंई वसीलो
मां बदकार आहियां, मां गुनहगार आहियां
तूंआहीं बक्षणवारे, मां आहियां ऐबनवारो
तुंहिंजो सखा जो दर आ, मां त खता जो घर आं
रहेमत जी चादर में ढकियो मूंखे
रहेड़कीअ वारा-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

२. अक्हांजो रहेड़की द्वारो, सुर्ग खां आहे प्यारो (२)
 अचे थो भागनवारो, हले थो अखंड भंडारो
 भागन वारी आ धरती, जिते आ किस्मत खुलंदी
 सच्चाई प्रेम भक्ती, जुगाजुग हलंदी रहंदी
 धुनी साहेब जो सिमरन, करे थो तन मन प्रसन्न (२)
 हर घर में मौज मची आ, सच्चो सतराम धुनी आ
 विश खत्री चरण तुंहिजे में,
 शब्द लिखी थो तोखे रिझाए-----
 रहेड़कीअ वारा -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “औरों को उपदेश देने के बजाय उन पर अमल करना उश्चति की राहें खोल देता है।”
- “फूलों में कांटे देखने वाले रह जाते हैं और कांटों में फूलों को देखने वाले काम्याबी पाते हैं, क्योंकि दुख के बाद सुख निश्चित है।”
- “हर इंसान ईश्वर की ऊंची देन है और हर एक से प्यार करना ईश्वर से प्यार करना है और किसी ने नफरत / छूटछात करना ईश्वर से मुख मोड़ना है।”
- “सतगुरू चरणों बें बैठने से अहंकार और नाम सिमरण से विकार खत्म होते हैं, फिर नाम धुन के पवित्र प्रकाश में परमात्मा की प्राप्ति होती है, सो सतगुरू चरणों में बैठके नाम में रजो और मानवता की महानता (प्रभु प्राप्ति) को पहुंचो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(७६)

थलु: भागावालीयों ओ -----
 नाम जपो सतराम नाम, सतराम नाम

१. तेरी बिगड़ी बन जायेगी हो -----
 तेरी बिगड़ी बन जायेगी, बन जायेंगे काम
 जप सतराम नाम, सतराम -----
२. सतराम नाम का सिमरन दिल में हो -----
 सतराम नाम का सिमरन दिल में
 करते रहो सुबुह शाम नाम, सतराम नाम -----
३. रंजीत सागर सिमरन करके हो,
 रंजीत सागर सिमरन करके दिल को मिला आराम
 जपो सतराम नाम -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “दुख आने पर अपने कुकर्मों का फल और सुख आने पर प्रभु कृपा समझने वाला सदा सुखी रहता है।”
- “अगर जाने अंजाने में गलती हो जाए तो उसका प्रायाश्चित पछतावा ये है कि एक बार तौबा करे और वही गलती फिर कभी न होने पाए।”
- “सत्संग दुख मिटाते, पाप काटते और जीवन सुधारते हुए मालिक मिलन का नाम है।”
- “अच्छे इंसान को हर किसी में अच्छाई दिखाई देती है, और किसी में भी खराबी दिखाई नहीं देती, सो बेहतरी करो और ऊंचे बनो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(७७)

थलु:रहेड़कीअ में अचणवारा,
सच्ची डेवरी चुमण वारा
तुंहिंजेवारिस नानोआ, तुंहिंजोराखोनाना आ
तुंहिंजो वारिस सच्चो सतराम आ-----

१. जीवन जे हर दुख सुख में, जीवन जे हर दुख सुख में
धुणी साहेब पढ़णवारा, सच्ची डेवरी चुमण वारा---
तुंहिंजो -----
२. हर विस्पत ते तूं अचीं थो , हर विस्पत ते तूं अची थो
अची शेवा करण वारा , सच्ची -----
३. वेही रूप हजुरी सां गडु, वेही रूप हजुरी सां गडु
अची नेम करण वारा , सच्ची -----
४. वेही हाथीअ जी सवारी ते, वेही हाथीअ जी सवारी ते
धुनी साहेब पढ़णवारा , सच्ची -----
५. दास हर कदम कदम ते, दास हर कदम कदम ते
सतराम जपणवारा , सच्ची-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “मानव जन्म में महा पुरुष की शरण और मुक्ति की इच्छा
ईश्वर की रहमत है उसे पाकर जीवन की सफलता तक
पहुँचो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(७८)

तर्जु: मैं तेनू समझांवा कि
थलु:तो दर अरदास आहे, अंदर में ही आस आहे
सदा तुंहिंजो नाम जपियां, तुंहिंजे दर ते अचां
बुराईयुनि खां मां बचां
तो दर -----

१. सांई सतराम नालो तुंहिंजो, दिल खे डींदो सुस्तर आ
हर हधिं आहे हाजूर नाजूर, सच्चो तुंहिंजो नूर आ
सदा तुंहिंजो नूर डिसां, भरियल भरपूर डिसां
बुराईयुनि खां मां बचां,
तो दर -----
२. दोरंगी आ दुनिया सारी, कोई कंहिंजो नाहे
सच्चो साथी तूं आ जग में, तुंहिंजो सहारो ही आहे
सदा तुंहिंजा चरण चुमां, सदा तुंहिंजे दर ते निमां
बुराईयुनि खां मां बचां,
तो दर -----
३. कहिड़ी ताकत कलम खे आहे, तुंहिंजी महिमा लिखाए
लिखण लिखाइण वारे तूं आ, रतन खे ताकत नाहे
सदा तुंहिंजा गीत लिखां, सुबुर ऐं शुकर सिखां
बुराईयुनि खां मां बचां,
तो दर -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(७९)

थलु:जब कोई नहीं आता, मेरे सांई आते है
मेरे दुख के दिनों में वो, बड़े काम आते है

१. मेरी नैया चलती है, पतवार नहीं चलती
किसी और की अब दरकार नहीं चलती
मैं डरता नही जग से, सांई साथ रहते हैं
मेरे दुख -----

२. कोई याद करे इनको, दुख हल्का हो जाए
कोई भक्ती करे उनकी, वो उनके हो जाए
ये बिन बोले सबकुछ पहेचान जाते है
मेरे दुख -----

३. ये इतने बड़े होकर दिनों से प्यार करे
अपने भक्तों के दुख को ये पल में दूर करे
सब भक्तों का कहना सांई मान जाते है
मेरे दुख -----

४. मेरे मन के मंदिर में सांई का वास रहे
कोई पास रहे ना रहे, बस सांई पास रहे
मेरे व्याकुल मन को, सांई जान जाते है,
मेरे दुख -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(८०)

थलु:हरी शरणम, शरणम, ॐ शरणम, ॐ कार शरणम
स्वागत है आपका सच्चे सांई के धाम में
दिल से है वेलकम, फुलों से है स्वागतम
प्यारे भक्तों ----- (२)
उठकेहाथ, स्वागत करो सब मिलके, मिलके
स्वागत है -----

१. सीस झुकाके करते हैं, संतो का हम स्वागतम
भक्तों का थी स्वागतम, मस्तों का भी स्वागतम
हरी शरणम (२), ॐ शरणम, ॐकार शरणम
स्वागत है -----

२. धन धन भाग हमारे, आप जो पधारे है
आपने जो प्यार दिया, खुले नसीब हमारे है
शिव शरणम, शक्ती शरणम (२)
स्वागत है -----

३. सच्चे सांई की सभ पे रहेमत ही रहेमत हो
कोई न जाये खाली सागर रंजीत सब अरदास करो
स्वागत है -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(८१)

तर्जु: ला मुंहिंजी पत रखजांए
 थलु: सांई मुंहिंजी लज रखजांए, सच्चा सतराम
 रहेड़कीअ जा, देवड़ीनजा, दातार स्वामी
 सुहिणा सांई रहेड़कीअ वारा,
 सच्चा सतराम प्यारा
 सांई मुंहिंजी हो , सांई मुंहिंजी -----

१. कंवर खे तो अमर बणायो,
 हिंद सिंध में जंहिंजो शान वधायो
 शहिदन जा कयुई सरताज, सच्चा सतराम
 रहेड़कीअ जा, देवड़ीन जा -----
 सांई मुंहिंजी -----

२. मोआ माणहूं तोई जीआय्या
 टिहड़ वारनि जा ताप निवाय्या
 डोखीयुनि जा दुख लाहीं थो सच्चा सतराम
 रहेड़कीअ जा -----
 सांई मुंहिंजी -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

• “पाप में पड़ना मानव का स्वभाव, फिर फिर करन शैतानी
 स्वभाव, पाप पर दुखी होना संत स्वभाव और सब पापों से
 मुक्त होना ईश्वरी स्वभाव है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(८२)

तर्जु: सोचो ज़रा सोचो (राजा हिन्दुस्तानी)
 थलु: रामनाम बोलो, सतराम नाम बोलो
 दुख टल जाए, जाये बिमारी
 ऐसा है सतराम परउपकारी, प्यारा सुंदर
 श्याम कृष्ण मुरारी
 रामनाम बोलो-----

१. रहेड़कीअका ये राजा है, सबका भाग्यविधाता है
 जिसने भी है याद किया, उसका बेड़ा पार किया
 इसके नाम से, सच्चे नाम से, किस्मत अपनी खोलो
 रामनाम बोलो -----

२. जो कहते हैं, सुनता नहीं, दिल से सांई को सुनाते नहीं
 जिसने भी पुकारा है, उसको सांई ने तारा है
 इसके ज्ञान से, सच्चे ध्यान से, मुख को तुम खोलो
 रामनाम बोलो -----

३. रंजीत सागर सुन लो तुम
 दुनिया की मत सुन लो तुम
 सतराम सांई की आओ शरण
 सतराम सिमरन कर लो तुम
 इसके प्यार में संसार में, मीठा सबसे बोलो
 राम नाम बोलो -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(८३)

थलु: राजी आ, नानो साईं सभ सां राजी आ
मस्तो मस्त आहे, सभजो रहबर आहे
परवाह असांखे छाजी आ
राजी आ -----

१. रहेड़कीअ धाम जो आ शहंशाह
तिर्थधाम जो आ बादशाह
सखी लजपाल आहे, बेड़ा कंदो पार आहे
खटी दुनिया जी बाज़ी आ
राजी आ -----

२. तीर्थधाम जो सरताज आ,
दुनिया खे जंहिं ते नाज़ आ
मस्तक में मणी आहे, दिल वयो खणी आहे
रहेड़की साहेब निवासी आ
राजी आ -----

३. साईं ते रखियो जंहिं यकीन आ
मोटाईदो खाली कीन आ
ईदो जो सुवाली आहे, मोटाईदो खाली नाहे
डींदो सब खे बाज़ी आ
राजी आ -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(८४)

तर्जु: कहो ना प्यार है
थलु: मिलियो जनम, ठाहियो करम
हलो सभेई तीर्थधाम ते
सच्चे सतराम डे, साईं कंवरराम डे

१. नागपूर जी भूमीअ ते बणियो तीर्थधाम आ
अर्श खां लही आयो हिते, साईं सच्चा सतराम आ
महके पवन, महके गगन
डिसी सुहिणे तीर्थधाम खे
सच्चे सतराम -----
मिलियो -----

२. ब्रह्मा, विष्णु, शिवशंकर ईदा करण हिते दर्शन
दरस करे दुनियावारा, मनडो कंदा पंहिंजो प्रसन्न
करे दर्शन मन थियो मगन
डिसी सुहिणे तीर्थधाम खे
सच्चे सतराम -----
मिलियो -----

३. हल प्रेमा गडिजी हलूं, साईं सच्चे जो टोलो
नागपुर में थींदी भली, रस्तो थींदो पंहिंजो सौलो
भर तूं कदम, साईं शरण, अची डिसाजं तीर्थधाम डे
सच्चे सतराम -----
मिलियो -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(८५)

थलु: न नाम थो जपीं, न ज्ञान थो खणीं
छो पोइ गुरू कयई (२)
हक ते दुखी आहीं, मन तू
न दान थो करीं, न ध्यान थो करीं
हक ते दुखी-----
न नाम थो -----

१. न शेवा थो करीं, न हुकुम मजीं थो
न सुख छडीं थो, न सख्तयूं सहीं थो
हक ते दुखी -----
न निंड थो छडीं, न ऐश थो छडीं
छो पोइ गुरू -----
न संसार थो छडीं, न सिमरन थो करीं
छो पोइ गुरू -----
न नाम थो जपीं -----

२. न माण छडीं थो, न हिर्स छडीं थो,
न खोट छडीं थो, न सच ते हलीं थो
हक ते दुखी -----
न भव थो करीं, न भाव थो करीं, छो पोई -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

न चिंता थो छडीं, न चिंतन थो करीं, छो पोई-----
न नाम थो जपीं -----
हक ते दुखी -----

३. गुरुमंत्र सां आनंद छो न प्यार करीं थो
जे मंजिल चाहीं थो, छो न सम में रहीं थो
न लोभ थो छडीं, न पाप थो छडीं, छो पोई-----
पंहिंजो पाण ते छो न रहम करीं थो, छो पोई -----
न नाम थो -----
हक ते दुखी -----
न दान थो करीं ----- न नाम -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “घर आये को इज्जत और आदर देने से अपनी इज्जत और आयु बढ़ती है।”
- “हृदय से हरी नाम, जबान से ईश्वर आराधना और हाथों से सत कर्म करने से इंसान महान बन के भगवान को पाता है।”
- “घर संसार में रहकर जिसका चित्त नाम सिमरण के साथ प्रभु प्रेम में रंगा रहे वो लोक में सुख और परलोक में साहब पाता है।”
- “दान और पुण्य छिपाने से बढ़ता है, और दिखाने या बताने से मिटता है।”
- “नाम सिमरण व प्रभु भक्ति से हर्ष व शोक यानी खुशी व गम और चिंता व भय यानी खौफ व फिकर मिट जाते हैं।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(८६)

तर्जु: डफली वाले, डफली बजा
थलु: बणियो तीर्थधाम आ नागपूर में आ
जिते मुंहिंजो राम वसायो सुर्गधाम
हल प्रेमी तीर्थधाम,
बणियो -----

१. देवड़ी सुर्ग खां सुहिणी सजी आ,
आयो हली भगवान आ
मस्त मगन थी असां शेवकन
नाम जपियो सतराम आ
तुं भी हल प्यारा, डिसी तीर्थ नज़ारा
जीवन पंहिंजो बणाए
बणियो तीर्थधाम -----

२. नाम सिमरण जी, शेवा करण जी,
आई घड़ी आहे प्यारा
शेवा में पंहिंजो नालो लिखाए
जीवन सफल कर प्यारा
तूं भी हल प्यारा, डिसी तीर्थ जा नज़ारा
बणियो तीर्थधाम -----

३. साईं कंवरराम ते कृपा कई हुई
पंहिंजे रंग में रचायो
तीर्थधाम ते स्वर्गधाम ते
पाण सां गडु वठी आयो
बणियो तीर्थधाम -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(८७)

थलु: सबसे सुंदर गहरा समंदर, वो है मेरा सतराम
सबसे सुंदर सबसे प्यारा है तेरा दरबार
जो लागे प्यारा प्यारा, जगत से न्यारा न्यारा

१. तू ही रक्षक, तू ही बंधु, तू ही मेरा सतराम,
साईं तू ही मेरा सतराम
तू ही दाता भाग्यविधाता, तू ही मेरा भगवान, साईं तू ही -----
हाथ पकड़कर ले आया है, दिखाया रहेड़की धाम
लो लागे न्यारा न्यारा -----
सबसे -----

२. अनजानी इस दुनिया में जब तुझे लिया पहचान साईं तूने -----
नाम दिया है, अहिसान किया है, ध्यान दिया वरदान साईं -----
पलपल ध्याऊं हरपल गाऊं मिला है साईं सतराम,
जो लागे प्यारा -----
सबसे -----

३. और न कुछ था देख सकूं जब देखूं तेरी तस्वीर, साईं देखूं -----
अपनी छैया की छाया में लिख दे मेरी तकदीर, साईं लिख दे -----
हाथ पकड़कर ले आया है, दिखाया तीर्थधाम,
जो लागे प्यारा -----
सबसे -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम
सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम
Sai Kanwarram, Sai
Dulah Darvesh, Sadhram
Photo

साईकन्हैयालाल

साई कंवरराम

साई साधराम

साई कंवरराम, साईकन्हैयालाल
ऐं साई साधराम जा भजन

(१)

तर्जः माफ मंदायूं करि गुनाहगार आहियूं,
तुंहिंजा बार आहियूं
रहेड़कीअ वारा साई,
सतराम प्यारा तुंहिंजा तलबदार आहियूं

१. विहारे कंवर खेहिकडीहं चयाई, मुंखी पायेमेल में भगत थोसडाई
वठी आर जो नाणो कयो तो आ माणो
तोखां बेजार आहियूं, माफ -----
२. किरी पियो कंवर पेरन ते सतराम साई,
माफी डियो मालिक दातार आहीं,
आयुस शरण तुंहिंजी पयुस शरण तुंहिंजी,
तुंहिंजा असां बार आहियूं, माफ -----
३. डिसी अहिड़ी नियाजी गुरु गोढ़ा गारिया
दिल सां कंवर खे दिली हार चाढ़िया,
सतराम जे संग डिनो हो कंवर खे रंग
जंहिंजा असां बार आहियूं, माफ -----
४. करे वियो कंवरराम गुरु घर जी शेवा,
मिलिया मोट जंहिंखे संतन वटां मेवा
बुध धनवानी संतन जी कहानी
जंहिंजा तलबगार आहियूं,
माफ -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२)

तर्जु: जब कोई बात बिगड़ जाए।
 थलु: हवाऊँनि में, फिज़ाऊँनि में, गुंजे घनघोर
 घटाऊँनि में आवाज़ अमर तुंहिंजो कंवरराम
 अंधेरन में उजालन में गुंजे घनघोर घटाऊँनि में
 ऊचे ऊचे पहाड़नि में एस.एस. डी. जे द्वारन में
 आवाज़ अमर तुंहिंजो कंवरराम
 कंवरराम----- (८)

१. पाए जामो बधी छेरु कीअं हो राम रिझायो,
 बणी नाचू पाए फेरु सतराम सरचायो,
 चंड ऐं सितारनि में बारशि जे हर बुंदन में
 आवाज़ अमर -----

२. अमीरनि जो सहारो हो, गरीबनि जो गुज़ारो हो,
 सच्चे सतराम खे साईं ऐडो प्यारो हो,
 सच्चे साईं जे यादुनि में ऐं बुलबुल जे सदाउनि में,
 आवाज़ अमर -----

३. आहे जरवारन जो जानी, जंहिंजो संगीत अमर आहे
 साईं कंवरराम जो कुंदन, हर गीत अमर आहे,
 मीठी कोयल जी बोलीअ में, हर माउ जी लोलीअ में
 आवाज़ अमर -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३)

तर्जु: कीन थी मुंहिंजी सरे-----
 थलु: कुहर बि अघजी विया, शेवा बि अघजी वई
 कंवर ते राजी थी पिया, सच्चा साईं राजी थी पिया

१. जरवान जे शहर में (२)
 अखियूं अखियुनि सां मिलजी वई, शेवा बि अघजी वई
 कंवर ते -----

२. हथ रखियो कंवरराम ते (२)
 जोड़ी सुहिणी बणिजी वेई (२)
 शेवा बि अघजी वई
 कंवर ते -----

३. कंवर भी घुरी गोद सांइं खां (२)
 रंजीत सां मिलजी वेई, शेवा बि अघजी वई
 कंवर ते -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “कलह, क्रोध, झगड़ा व फसाद वाले घर से आसीस व कृपा / रहमत व बरकत चली जाती है।”
- “दीन, हीन, गरीब कमजोर पे दया व उनकी रक्षा व हिफाजत करने वालों पे ईश्वर की रहमत रहती है।”
- “धन, पैसे पदार्थ का सदुपयोग सुखी और शाहूकार बनाता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(४)

तर्जु: आ लौट के आज्ञा मेरे मीत
थलु: आऊ सतगुरु सच्चा सतराम, अची
अवखीअ में सहाई थी, वई गाल्हि वधी
आ तमाम, अची-----

१. तुंहिजे हुकुम सां आयुस मां दाता, भक्ती करण हितड़े सांई
रखी गाल्हि दिल में, विझी मुश्किल में, ठगी कई आ मूंसां माई
मां त हाणे थियां थो बदनाम,
अची-----

२. कुकां कंवर जूं बुधी कंवर लाए, सतराम आलाप आलाप्यो
घबराई छे थो कंवर प्यारा, दिल में अची वियो जण न्यापो
तो सां गडु आहियां मां सुबह शाम,
अची-----

३. सतगुरु संभारे, मांई बीहारे, हिते संत शुरू कई लोली
हुकुम इलाही डिठो खलक खुदाई
बार शुरू कई आ बोली
बुधी ऊँआ ऊँआ जो आवाज
अची-----

४. हजारन दुनिया में भक्ती कई आ
पर तुंहिजे मट नाहे साणी
हुंएं पाण तूं ही प्रभु प्यारा
कंवर बि तुंहिजो दरबाणी
धनवानीअ आ हरदम गुलाम
अची-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(५)

तर्जु: दिन सारा गुजारा तेरे अंगा - मेरे चार शब्दा खैर
थलु: थींदो के कंवर जहिंदो दानी, हुयो संत सच्चो लासानी
कयो सांई सभजो खैर, (३)

१. ठाहे जोड़े बखमल जो डिनो सांई कंवर खे हथ में
ओ----- आंई चरी का ओचितो, आस हुयस का मन में
डिनो संत चरीअ खे जोड़ो, हुयो चंड्र जो डीहं सदोरो
कयो-----

२. चवे माई ओ सांई, मुखे चंड्र जे डीहं तो ढकियो आ
ओ----- रखंदो तुंहिजी लाज हू जहिं हीउ जहान अडियो आ
ईअं चई चरी थी वई रवानी, वेई अघजी चरीअ जी ज़बानी
कयो-----

३. बेवाहन, बेवसीलन सां, सांई कयूं से भलायूं
अचो त गडिजी पाण में, मेला सांईअ जा मल्हायूं
हूंदो याद हेमन किन भुलंदो, जेसी सिज चंड्र आ तेसी हुलंदो
कयो-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “संसार से मांगना रूसवा / बेइज्जत और प्रभु से मांगना इज्जतदार बनाता है सो प्रभु के आगे झोली फैलाओ।”
- “जिस तरह अंधेरे में पड़ी रस्सी को सर्प समझ लिया जाता है उसी तरह अज्ञानवश इंसान देह को आत्मा समझ बैठता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(६)

थलु: मस्त दुल्हो सखावत हलाए, खाली कीन मोटाए
नाने जे नाले जेको घुरे थो, दुल्हो मालामाल बणाए
रहेड़की साहेब में, दुल्हा दरवेश नाने जूं मौजा मचाए
(वाह वाह नाना तुंहिंजा खज़ाना) (२)

१. पुट्ट घुसने जेको दुल्हे वटि आयो, निशानी सां पुट्ट डिनो आ
दुल्हे चयो निशानी जे हुजेस त, नानो पुट्टो डिनो आ
नाने जो दुल्हे सां राज आ अहिड़े, नाने सब कुछ डिनो आ
वाह वाह -----

२. शेवा कंहिंजी अजाई न वेंदी, सब खे फल मिलियो आ
दुल्हे चयो जेको शेवा कंदो, उहो मालामाल थियो आ
साफ़ज़ाहिर रहेड़कीअ जी शेवा, कंवर खे लाल कयो आ
वाह वाह -----

३. रहेड़की नगरी सखा जो दर आ, कर्ज मर्ज लहिन था
जंहिंजे किस्मत में न लिखियल आ
अणलिखियो बि डियन था
रंजीत सागर रहेड़की साहेब में, रूहानी संत रहनि था
वाह वाह -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(७)

थलु: लाल सखी लजपाल सखी, वडी दुल्हे जी धमाल सखी
बेशक आहे जमाल सखी, दुल्हो (३) दरवेश सखी
लाल -----

१. रहमत जो पैगाम आ दुल्हो, साईं सचो सतराम आ दुल्हो
भक्ती में कंवरराम आ दुल्हो, जंहिं भी आ जहिडी आस सखी
दुल्हो -----

२. मस्तन जी जागीर आ दुल्हो, कुल पीरन जो पीर आ दुल्हो
नाने जी तस्वीर आ दुल्हो, अणलिखिया डींदो आहे लिखी
दुल्हो -----

३. बाला बेपरवाह आ दुल्हो, मुड़दे में कुंदन साहु आ दुल्हो
हिणन जो हमराह आ दुल्हो, दुल्हे सां रखजाएं प्रीत पक्की
दुल्हो -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “शील व शर्म इंसान को श्रेष्ठ व उत्तमता यानी शान व मान बख्शाती है, सो शीलवान बनो।”
- “अपने अंदर में प्यार व मोहब्बत के दीप जगाओ क्योंकि अपने में प्यार व मोहब्बत के दीप जगाने से पूरी दुनिया रौशन दिखाई देती है।”
- “सच्चे सतगुरु से पाए प्रभु नाम का सिमरण करो क्योंकि ये ही वो मूल या असल धन है जो लोक संवारे और परलोक सुधारे।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(८)

थलु: नाने जी आरती गाए, मस्तीअ में वार लुडाए
वयो नींह जा नारा लगाए,
दरवेश आ दुल्हो, दरवेश आ दुल्हो

१. साई सतरामदास जे नाम तां कुरबान कन्हैयालाल आ,
नाने साईअ खे प्यारो आ, जिंदजान कन्हैयालाल आ
मस्तीअ में रहंदो आहे, हरदम वेठो रिझाए
वयो नींह जा नारा -----

२. दुल्हे साईअ जी मस्तीअ खे, जंहिं प्रेमीअ आहे जातो
जण साक्षात सतराम खे, दुल्हे में आहे पातो
सारी दुनिया झुमाए, साई विस्पत खूब मनाए
वयो नींह जा -----

३. बी कुंदन कहिडी गाल्हि करे, हिनजी हर गाल्हि निराली
अणलिख्या बि लिखजी वेंदा आहिनि,
आहे हिनजी अहिडी जलाली
गाढो झंडो झुलाए, कंठा कोलाबा पाए
वयो नींह जा नारा -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “किसी की खराबियों, बुराइयों को न उछालें क्योंकि दूसरों की खराबियों को ना उछालने से अपनी खराबियां खत्म होती है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(९)

थलु: करे अमिरी वयो त फकीरी,
सदा मगन में रहंदो हो
सांइ कन्हैयालाल, सच्चे सतराम जो नालो
जपाईदो हो-----

१. प्रेम सां पुछां जंहिं कई तुंहिंजी, तंहिंजो बेडो पार थियो
कष्ट मुसीबत कटिजी वयडा, धागो जंहिं तुंहिंजो वरितो
दया जो धागो पंहिंजनि हथनि सां हर सुवालीअ खे डींदो हो
सांइ कन्हैयालाल-----

२. अरसे थोड़े में सजन छा रहेडकीअ में रंग लगी विया
सब जे मुख में जी सच्चा सतराम जा नारा अची विया
घोटन आ घोट मस्त, बस इहा शिक्षा डींदो हो
सांइ कन्हैयालाल-----

३. दर ते जेको आयो सुवाली, तंहिंखे न कयड वापस
लाहे डिना तो अंग जा कपिडा, हरको गाए तुंहिंजो जस
हरको नंदडो वडडो तोखे, दुल्हा दरवेश चवंदो हो
सांइ कन्हैयालाल-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “स्वार्थ से या स्वार्थी कभी अपना नहीं होता, और प्यार से कोई पराया नहीं होता। सो सबसे प्यार करो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१०)

तर्ज: गुल गुलाब जा ठाहे खणी अचो
अजु आया साई साधराम आ..... (२)

१. सेज सजाए छो न नचां मां, घड़ी सुहानी आई आ
चंडू सितारा खुश लगन था, रौनक अहिड़ी छाई आ
गुल गुलाब-----
२. देवताऊं बि गुल छणिकाये, कयो साईं जो स्वागतम
अजु अंगण ते कुरब जा ही साईं भरे आयो कदम
गुल गुलाब-----
३. रवी सिकायल सारी संगत ते ज्ञान जी वरखा कई साईं,
दुख मिटाए सुख डिना हिन, दर्शन पंहिंजो डेई साईं
गुल गुलाब-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “किसी की भी खामियों या गलतीयों को ना उछालो क्योंकि किसीके भी ऊपर कीचड़ / गंदगी फेंकने से अपने ही हाथ गंदे होते हैं।”
- “स्वर्ग की इच्छा या चाहत इंसान को महान बनाती है क्योंकि स्वर्ग सत्कर्मों का परिणाम है।”
- “सत्कर्म करो क्योंकि इंसान जन्म सेधरती पे आता है और अच्छे कर्मों या कार्यों से आसमान की ऊंचाईयों को छूता है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

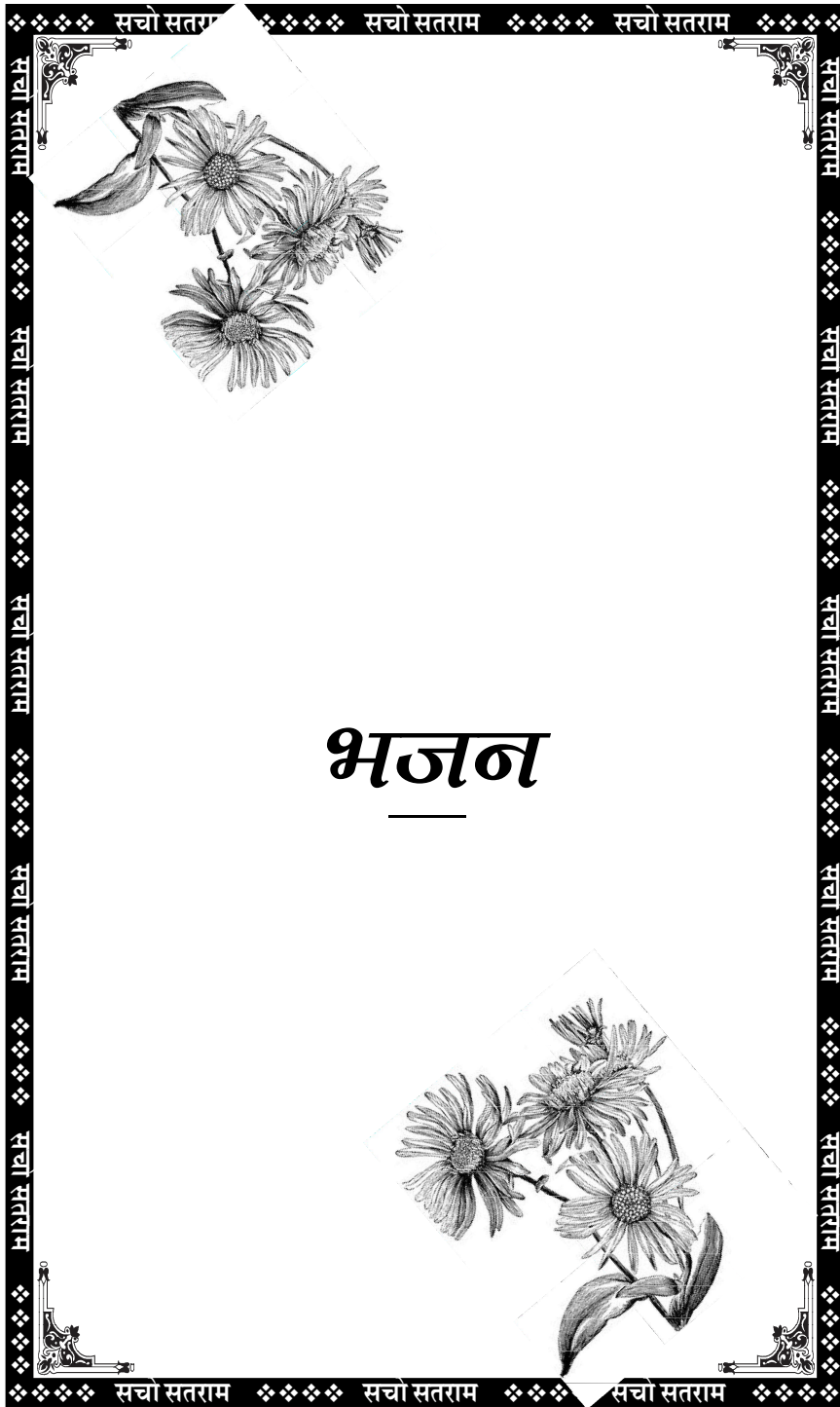
सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(११)

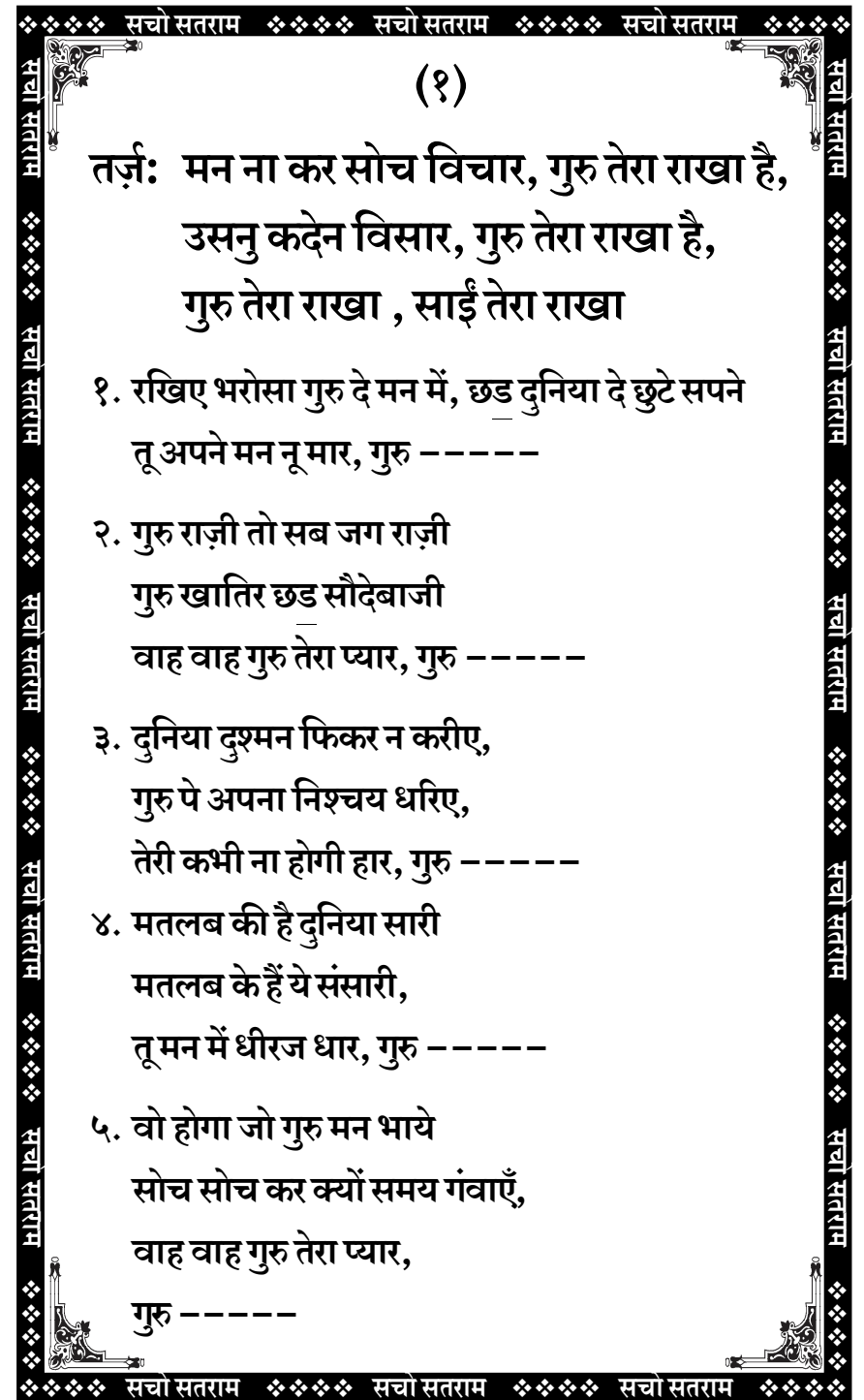
तर्ज: गोरे रंग पे न इतना गुमान कर
थलु: डिस सुहिणा साईं साधराम सदा,
दुखड़ा थो कटे सुखड़ा थो डिये
आहे संतन में सिरमोर साईं (२)
वेही वचन जेके मिठड़ा जो डिये
डिस-----

१. वेही बैठक में साईं प्रेमीयुनि सां
करे गाल्हियूं मिठयूं नेमीयुनि सां
जेको सिक सां थो साईं खे सडे, तंहिंखे प्यार मंझां थो
सडड़ा दे।
आहे-----
२. पंहिंजे सतगुरु खेरिझाये थो, सच्चो सतराम सबखे जपाए थो
पंहिंजी रहमत सां साईं निपुट्र खे, अणलिखिया वेठो थो पुट्रुं डे,
आहे-----
३. पंहिंजे सिर ते सखत्यूं सहंदो आ, तभी गुल जियां साईं ट्रिडंदो आ
संगत अचे जेको चरण चुमण, सारी संगत अचे जेको चरण चुमण
बई सिर ते हथिड़ा रखंदो आ
आहे-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम



भजन



(१)

तर्जः मन ना कर सोच विचार, गुरु तेरा राखा है,
उसनु कदेन विसार, गुरु तेरा राखा है,
गुरु तेरा राखा , साईं तेरा राखा

१. रखिए भरोसा गुरु दे मन में, छड दुनिया दे छुटे सपने
तू अपने मन नू मार, गुरु -----
२. गुरु राजी तो सब जग राजी
गुरु खातिर छड सौदेबाजी
वाह वाह गुरु तेरा प्यार, गुरु -----
३. दुनिया दुश्मन फिकर न करीए,
गुरु पे अपना निश्चय धरिए,
तेरी कभी ना होगी हार, गुरु -----
४. मतलब की है दुनिया सारी
मतलब के हैं ये संसारी,
तू मन में धीरज धार, गुरु -----
५. वो होगा जो गुरु मन भाये
सोच सोच कर क्यों समय गंवाएँ,
वाह वाह गुरु तेरा प्यार,
गुरु -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२)

तर्जः तुम्ही मेरे मंदिर, तुम्ही मेर पूजा
थलुः मुझे तूने मालिक सभी कुछ दिया है,
तेरा शुक्रिया है (२)

१. न मिलती अगर दी हुई दात तेरी
तो क्या थी जमाने में औकात मेरी
ये बंदा तेरे ही सहारे जीया है
तेरा-----

२. मेरा ही नहीं तू सभी का है दाता
सभी को सभी कुछ है देता दिलाता
खाली था दामन तुम्हीं ने भरा है। तेरा-----

३. मेरा भुल जाना तेरा ना भुलाना
तेरे रहमत का कहाँ है ठिकाना
तेरी इस मुहब्बत ने पागल किया है। तेरा -----

४. तेरे ही कर्म से जिंदा हूँ मालिक
तेरे बंदगी से बंदा हूँ मालिक,
तुम्हें ने तो जीने के काबिल किया है। तेरा-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “व्यवसाय में शपथ / कसम लेने या देने से बरकत चली जाती है सो कसम से परहेज करो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३)

थलुः बाबा नानक दुखीयां दे नाथ वे, दे दे सर पे मेरे तेरा हाथ वे
मेरी सी कोई नेक कमाई, मेणू दर तेरे ले आई
मेरे अपने भी छड गये साथ वे, दे दे सर पे मेरे...

१. दिन, दर्द, दःख भंजना, घट घट नाथ अनाथ
शरण तुम्हारी आयो, नानक के प्रभु साथ
मेरी सी -----
मेरे अपने -----
धन गुरू नानक (३) धन गुरू नानक देव जी (३)

२. मैं मछली ते तू है पानी, मर जायेगी तेरे बिन निमाणी
तड़प तड़प के निकलेगी जान वे,
तू छडीं ना मेरा साथ वे, दे दे सर पे मेरे तेरा हाथ वे
बाबा ----- धन गुरू नानक -----

३. मैं सब ने है दूरकारीआ, मैं तां माडे करमा दा मारीआ
मेरे करम धरम तेरे हाथ वे, दे दे सर -----
बाबा नानक -----
धन गुरू नानक -----

४. फिरत फिरत प्रभु आईआ परीआ तब शरनाई
नानक की प्रभु बेनती अपनी भक्ती लाए
मेरी-----
बाबा नानक -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(४)

तर्जु: जिंदगी की ना टुटे लड़ी

थलु: तेरे दरबार की हाजरी सबसे बढ़िया है
सबसे खरी मेरे सतगुरु तेरी नौकरी.....

१. खुशानसीबी का जब गुल खिला
तब कहीं जाके ये दर मिला,
हो गई अब तो रहमत तेरी, सबसे -----
२. मैं नहीं था किसी काम का
ले सहारा तेरे नाम का
बन गई अब तो बिगड़ी मेरी, सबसे -----
३. जब से तेरा गुलाम हो गया
तब से मेरा भी नाम हो गया
वरना औकात क्या थी मेरी, सबसे -----
४. तेरी तन्खवाह भी कुछ कम नहीं
कुछ मिले ना मिले गम नहीं
ऐसी होगी कहां दूसरी, सबसे -----
५. एक योगी दिवाना हूँ मैं
खाक चरणों की चाहता हूँ मैं
आखिरी इलतजा है मेरी, सबसे -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(५)

थलु: गुरु मेरी पूजा, गुरु गोबिंद, गुरु मेरा पारब्रह्म, गुरु भगवंत

१. गुरु मेरा देव, गुरु अलख अभेऊ
सरब पुज चरण गुरु सेव
गुरु मेरी -----
२. गुरु बिन अवर नाहि मैं थाऊँ, अनदिन जपऊ गुरु गुरु
नाऊ
गुरु मेरी -----
३. गुरु मेरा ज्ञान, गुरु हृदय ध्यान, गुरु गोपाल, पुरख
भगवान
गुरु मेरी -----
४. गुरु की चरण रहो कर जोड
गुरु बिना मैं नाहि होर,
गुरु मेरी -----
५. गुरु बहोत तारे भवपार, गुरु सेवा जम ते झुटकार
गुरु मेरी -----
६. अंधकार में गुरुमंत्र उजारा, गुरु के संग सगल निसतारा
गुरु मेरी -----

सलोक

ने मै सो ना गुण चल्ले
चारो चुका मेरीयां चिकर भरीया
मै केडी केडी भल भोसा

७. गुरु पूरा पाइए वडभागी, गुरु की सेवा दुख ना लागी, गुरु....
८. गुरु का शब्द न मेटे कोई, गुरु नानक नानक हर सोई
गुरु मेरी -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(६)

थलु: सुहिणा रस्ता पिया सजन, मुंहिंजो ठेपयो मनु
ज्योतियूं साहिब थ्यूं अचन
प्रेमी खुशीअ में मगन, पया झुमन ऐंनचन,
ज्योतियूं.....

रख त ज्योतिन वारे ते, पाणई पूरी कंदो,
रख त मुंहिंजे लाल ते, पाणई पूरी कंदो,
लाल झुले लाल झुले, लाल झुले लाल,

१. मण गुलन जा, प्रेमी प्यारा घुरायो,
उल्हासनगर जा रस्ता सजायो,
कई बहारी गुलन, मुंखे डाढो पिया वणनि,
ज्योतियूं-----

२. ज्योतियुनि साहेब जो स्वागत कंदासीं
लाल सांई जा सब पंजड़ा चवंदासीं
दुहल शहनायूं वजन
नारा लाल जा लगन, ज्योतियूं-----

३. प्रदीप प्यासी डिसो सुहिणो नजारो
पले ते आयो लाल सांई आ प्यारो
पयूं खुशीयूं थियूं वरन, सब भाग था वरन

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(७)

थलु: शुक्र करां मेरे दाता, तेरा शुकर करां (३)

१. दिन रात मैं तेरा शुकर करां
हर पल मैं तेरा शुकर करां
जब होवे घनेरा शुकर करां
जब होवे सेवरा शुकर करां
सुख दुख सब तेरा शुकर करां
कुछ भी नहीं मेरा शुकर करां
कण कण वीच तेरा शुकर करां
दिसदा है बसेरा
शुकर करां -----

२. दरबार बुलाया शुकर करां
चरणां नल लाया शुकर करां
सानु अपना बनाया शुकर करां
मेरा शान बढ़ाया शुकर करां
अहंकार मिटाया शुकर करां
धीरज उपजाया शुकर करां
देके न जताया शुकर करां
सानु पार लगाया शुकर करां
शुकर करां -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

३. दुनिया दा वाली शुकर करां
तेरी शान निराली शुकर करां
मैं तेरा सवाली शुकर करां
मेट ना खाली शुकर करां
वढी खुशहाली शुकर करां
उस दी तूं संभाली शुकर करां
कीतां जो कमाई शुकर करां
रखदा है संभाली शुकर करां
शुकर करां-----

४. हर आस अधुरी शुकर करां
किती तू पुरी शुकर करां
हर वक्त हजुरी शुकर करां
देता है जरूरी शुकर करां
रखंदा नहीं दूरी शुकर करां
कढ़ंदा मजबूरी शुकर करां
अरदास हर पूरी शुकर करां
तेरा रूप हजुरी शुकर करां
शुकर करां मेरा दाता, तेरा शुकर करां

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जिसे जानने और देखने के बाद बाकी कुछ देखने और जानने को न रह जाए, जिसमें लीन होने से जन्म - मरण मिट जाए उसे ही ईश्वर जाने।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(८)

थलु: मेरे घर के आगे साईं तेरा मंदिर बनजाये
जब खड़की खोलूं तो तेरा दर्शन हो जाए

१. जब आरती हो तेरी, मुझे घंटी सुनाई दे
मुझे रोज सेवरे साईं तेरी सूरत दिखाई दे
जब भजन करे मिलकर, रस कानों में घुल जाए
जब खिड़की-----

२. आते जाते साईं तुमको मैं प्रणाम करूं
जो मेरे लायक हो, कुछ ऐसा काम करूं
तेरी सेवा करने से मेरी किस्मत खुल जाए
जब खिड़की-----

३. नजदीक रहेंगे तो आना जाना होगा
हम भक्तों का साईं मिलना जुलना होगा
सब साथ रहे बाबा जल्दी वो दिन आये
जब खिड़की-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “दान और पुण्य छिपाने से बढ़ता है और दिखाने या बताने से मिटता है।”
- “एक सच्चा सतगुरु सारे संसार का ऐसा उद्धार कर सकता है जैसे एक दीप कई दीप रोशन कर सकता है, सो सतगुरु शरण जाओ।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(९)

तर्जः इक प्यार का नगमा है
 थलुः सच्चा सतगुरु कयो उपकार
 मुंखे सिदिक ऐं सबुर सेखार
 जिंदगी मुंहिंजी सारी, साईंशुकर, शुकर में गुज़ार

१. कुछ जग में मिले ना मिले
 पोइ भी मुखडो सदाई पयो खिले
 कडहिं बिये जी खुशीअ खे डिसी,
 मुंहिंजो मन कडहिं न जले
 धीरज जो दान दातार
 मुंखें आडुर खां वठी तूं हलाए
 जिंदगी -----

२. जेसीं तांई मां जग में जियां
 कहिंजी न मोहताज थियां
 दुख दर्द ऐं हर खुशीअ में, तुंहिंजा शुकर शुकर मजियां
 धीरज -----

३. गुरुदेव मां अहियां गुनाहगार
 गुनाह कयां थी बार बार
 डिसी मुंहिंजे गुनाह खे, सतगुरु किन धिक्कार
 धीरज -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१०)

थलुः तौबा कर मालिक दर, हर वेले हरवार तूं
 माफी घुरंदो रहु बंदा, जीअं पेश पड़ दरबार तूं
 तौबा -----

१. पुण्य कया थई जेके, पाप कया थई जेके
 सभ कुछ साहेब जाणे थो
 कर थोड़ो विचार तूं,
 तौबा -----

२. तो जहिड़ा केई अगेई, मालिक ढाए डाए छडिया
 छा ते तूं थो माण करीं, खोफ खुदा जो धार तूं
 तौबा -----

३. गुल हमेशा आजी कर, रब सुहिणे खे राजी कर
 बक्षणहार आ बक्षींदो, तोड़े आ ऐबदार तूं
 तौबा -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “अपनी कदर करने वाले की सभी कदर करते हैं, और अपनी कदर न करने वाले की कोई कदर नहीं करता।”
- “बुद्धिहीन / जाहिल को समझाने से ज्यादा कुज कराओ क्योंकि उसे समझाना यानी बंजर ज़मीन में बीज बोना और कटाना यानी काम्याबी करना।”
- “वाद विवाद में वक्त गंवाने के बजाय सतगुरु नाम सिमरण से समय सफल करो।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(११)

थलु: आया हो आया ----- (२)
 आया गुरु अथई घर में प्यारा
 भागनवारा, नसीबन वारा----- (२)

१. पुरब जनम जा कर्म खुलिया अथई
 तुंहिजे धर्म जा दाणा अधिया अथई
 सतगुरु मिलिया अथई, जीअ जा जीआरा
 भागनवारा, नसीबनवारा-----

२. रखी सिक श्रद्धा गुरु खे मजायो
 मन जूं मुरादूं पल में पुजायो (२)
 गुरु जे महेर जा भरियल भंडारा
 भागनवारा, नसीबनवारा-----

३. गुरु जे दर्शन सां सवें सुख मिलंदइ
 वेझो कडहिं न तुंहिजे दुख ईदइ
 गुरु जे महेर जा भरियल भंडारा
 सांई जे महेर जा भरियल भंडारा
 भागनवारा, नसीबनवारा-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “आहार की शुद्धि से बुद्धि शुद्ध होती है, और शुद्ध आहार होता है ईमानदारी की कमाई द्वारा लाये गये अन्न से तैयार किया हुआ भोजन”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१२)

थलु: करते हैं दाता तेरा हर पल शुक्रिया
 खुशीयां जो दी है उसका भी शुक्रिया
 हम तेरा दिया खाये, तेरा ही गुण गाये
 जीवन दिया जो, उसका भी शुक्रिया
 करते-----

१. जब से ये देखी है तेरी ये सूरत
 आंखों में बस गई है, तेरी ये मुरत
 तेरा दर्शन मुझे मिला, मुरझाया फुल खिला
 नजरें जो दी हैं, उसका भी शुक्रिया
 करते-----

२. हर पल जुबां पे, नाम हो तेरा
 तेरा गुणगान करना, काम हो मेरा
 तेरा सुमरन सदा करूं, तेरा ही ध्यान धरूं
 वाणी जो दी है, उसका भी शुक्रिया
 करते-----

३. तेरी कृपा से लगन ये लगी है
 सोई हुई तकदीर जगी है
 तेरी भक्ती मुझे मिली, जीवन को राह मिली
 भक्ती जो दी है, उसका भी शुक्रिया
 करते-----

४. हाथों से मेरे ना कोई गुनाह हो
 कदमों को तेरे दर पे चलने की चाह हो
 कहता ये भक्त दाता, तुम्हें ही है माना
 सांसें जो दी है, उसका भी शुक्रिया
 करते-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१३)

थलु: देना है तो दीजिए जनम जनम का साथ
मेरे सर पे रख दो सतगुरु अपने ये दोनों हाथ
देना-----

१. सांईं तेरे चरणों की धुली धन दौलत से महंगी है
एक नजर कृपा की सांईं, नाम इज्जत से महंगी है,
मेरे जीवन में तू कर दे, कृपा की बरसात
देना-----

२. झुलस रहे हैं गम की धूप में, प्यार की छैया कर दे तू
बिन मांझी के नाव चले ना, अब पतवार पकड़ ले तू
मेरा रस्ता रोशन कर दे, छाई अंधियारी रात
देना-----

३. इसी जनम में शेवा देकर
बहुत बड़ा अहिसान किया
संकट मोचन तुम हो सांईं
हमने तुम्हें पहिचान लिया
हम साथ रहे जनमों तक, बस होती रहे मुलाकात
देना-----

४. सुना है हमने शरणागत को, अपने गले लगाते हो
ऐसा हमने क्या मांगा जो देने से हिचकाते हो
चाहे दुख में रख, चाहे सुख में
बस रख ले इतनी बात, देना-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१४)

थलु: कीअं गुण गायां, कीअं गुण गायां, कीअं गुण गायां
ओ मुंहिजा सतगुरु, तुंहिजी मुहब्बत मां कीअं भुलाया
मां कीअं भुलाया

१. तुंहिजे मिलण खां अगु, मुंहिजे हिन जीवन जो
मकसद हुयो ना का कोई पतो हुयो
छा आहियां मां छा लाइ आयो हितड़े आहियां
जग में जीअण जी न काई विधी पयो जाणां
किथे-----

२. मैल चढ़ियल मुंहिजे मन मथां अहंकार जो
इंएं लगे पियो जीवन जण बेकार जो
भाग खुलियो के कर्म जो मिलियो संग तव्हांजो
भाग खुलियो आ नाम जो लगे रंग तव्हांजो
कीअं-----

३. नाम जपींदे निकरे मुंहिजो दम तो दर
जनम जनम तांईं रहां सदाईं नौकर तो दर
पंहिजी छाया खां कडहिं ना दूर रखजो
पंहिजी माया में दासीअ खे सुलाझाए रखजो
कीअं-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१५)

तर्जु: टुटे हुए ख्वाबों ने हमको ये सिखाया है
थलु: पन पन थी वयुस बिखरी, दुखड़न जी
हवाउनि में सीने सां लगायो गुरु रखो
पंहिंजी पनाहुनि में (२)

१. मां डाढो गंदो आहियां, मेरो या मंदो आहियां
जहिड़ो आहियां सतगुरु तुंहिंजो ही बंदो आहियां
का मंजिल डेखारियो, रूल्यो डाढो आ राहुनि में
सीने सां -----

२. मंदियों माफ कयो सांई, मुखे साफ कयो सांई
बस आस अब्हां में आ, इन्साफ कयो सांई
सत नाहे सहन जो रहियो, कमी करियो सजाउनि में
सीने सां लगायो गुरु-----

३. कंहिं सां बि न प्यार हुयो, हर पल तक्रार हुयो (२)
पारस खे वडाई हुई, कंध घोड़ सवार हुयो
दल दल में रहियुसि, फाथल दुनिया जी दगाऊनि में
सीने सां -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “महान उद्देश्य के लिए बलिदान देने वाले हर जिंदा इंसान की धड़कन बन कर अमर रहते हैं। उद्देश्य महान बनाओ और ऊँचाई को पाओ।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१६)

तर्जु: मुझे तेरी मुहब्बत का सहार मिल गया होता
थलु: तेरे अहिसान का बदला चुकाया जा नहीं सकता
प्यार ऐसा दिया तुने भुलाया जा नहीं सकता

१. अगर मुझको न तू मिलता, मेरा मुश्किल गुजारा था
जो पहुँचा है बुलंदी पर, वो इक टूटा सितारा था
तेरी उल्फत को इस दिल से, भुलाया जा नही सकता
तैर-----

२. मेरी हर श्वास पर दाता फक्त अधिकार तेरा है
मिला जो भी मिला मुझको, मेरा क्या था मेरा क्या है
तुझे दुनिया की दौलत से रिझाया जा नहीं सकता
प्यार -----

३. बड़ी उंची तेरी रहिमत, बड़ी छोटी जुबां मेरी
तुझे दाता समझ पाऊं, ये हस्ती है कहाँ मेरी
तेरी रहिमत को शब्दों में सुनाया जा नही सकता
प्यार -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “जब कोई शुभ कार्य आरंभ करो तो ऐसे वैसे वाद – विवाद को छोड़कर काम से काम रखो त इफलता सदा साथ रहेगी।”
- “श्राद्ध करो क्योंकि सबसे लंबी आयु संतान, विद्य, सुख, स्वर्ग व मुक्ति का आशीर्वाद मिलता है।”
- “यश व कीर्ति नेकी व नामाचारी ही इंसान के असल आभूषण हैं।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१७)

तर्जु: बोल मेरी तकदीर में क्या है
थलु: कितने अच्छे भाग्य हमारे ऐसा सतगुरु पाया है
जलती हुई इस दुनिया में मिली ये शीतल छाया है
कितने -----

१. बड़े थे दुख ही दुख इसमें
के ऐसी दास्तां सभकी
मिला न जब तलक ये दर, बड़ी परेशान थी जिंदगी
यही तो आया ऐसा मसीहा, जिसने रोग मिटाया है
जलती -----

२. कोई गुणवान या निरगुण सभी अपनाये जाते हैं
गुरु करुणा के सागर है, करुणा बरसाये जाते हैं
दुनिया ने जिसको ठुकराया, गुरु ने गले से लगाया है
जलती -----

३. यहां बेचैन रूह को, सबर संतोष मिलता है
जो है बेहोश जन्मों से, उन्हें भी होश मिलता है
जलती -----

४. कलम लिख लिख ले हारी है, जुबाँ गा गा के हारी है
जमीं आकाश से ऊँची, गुरु महिमा तुम्हारी है
सतगुरु तेरी रहिमत से ही, दर तेरा ये पाया है
जलती -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१८)

थलु: निशकामता जीवन में सतगुरु अची वजे
बैरागी विरती वारो जीवन, सतगुरु बणी पवे

१. मंदाई मुर न कंहिंजी नज़र अचे मूंखे नज़र सांई
कडहिं न बिज बियाई जो जमे न मूं अंदर सांई
तुंहिंजे संग जो मूं मथां, रंगडो चढ़ी वजे
निशकामता -----

२. प्रेम ऐं प्यार जी बोली, रहे मुख में सदा सांई
हलीमत ऐं नियाजी जी रहे रहणी सदाई
रहे रहणी सदाई सांई
तुंहिंजी रहिमत जो को कणो, मथां मुंहिंजे वसी पवे
निशकामता -----

३. कर्म सो ई कराये जायें, वणे जेको तोखे सांई
हलत सांई हलाए जायें वणे जेको तोखे सांई (२)
इहा वेनती अनहद जी, चरणन अधी पवे
निशकामता -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “संतों के सेवकों की भी सेवा व आदर करने वालों को संसार में सुख व आगे साहिब की रहमत मिलती है।”
- “ईश्वर व सतगुरु से ऐसे प्रीत लगाओ जैसे दीप से पतंगे की तो फिर प्रभु परे नहीं है।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(१९)

थलु: रहिणी ऊँची बणाए ओ मुंहिंजा गुरु
मन मुंहिंजे में प्रेम भर मुंहिंजा गुरु
जीवन मुंहिंजो साफ ऐ पवित्र रहे,
इहा ई अरदास अघाए मुंहिंजा गुरु
रहिणी

१. सांता वांगुरु धीरज मुंहिंजे मन में अचे
दुख सुख में मन मुंहिंजो कडहिं न लुडे
करियां शेवा परिवार जी नम्रता सां
फर्ज निभायाँ पंहिंजा शल मां कुछ न चवां
रहिणी-----

२. प्रेम डियां मां सब कंहिं खे तोखे डिसी
सादो जीवन रहे हमेशा देख खां बचे
कोई कींअं बि हले कोई कुछ बी चवे भली मौजा पिया माणें
न रीस करियां न जलन करियां डियो सुमित सची
ओ सिक सची डियो दर पंहिंजे लाई ओ मुंहिंजा गुरु
रहिणी-----

३. अच्छी चादर लाज शर्म जी तो डिनी आहे
मेरी ना थिए पछाडीअ ताई आस इहा आहे
बुरी नज़र खां , बुरी संगत खां तुं ई बचाईदे
कदम कदम ते सतगुरु मिठड़ा साथ निभाईदे
सारी संगत जी पुकार बुध मुंहिंजा गुरु
रहिणी-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२०)

थलु: गुरु संवारे छडे थो जीवन, गुरु करण प्यार जरूरी आहे
गुरु मिटाये मन जी चिंता, गुरु बिना ना मिले सफलता
संसार आहे दुखन जो सागर,
पार पवण प्यारा जरूरी आ
गुरु -----

१. सतगुरु जगत में शेवा करण लाए. ईंदो आ शिष्य खे प्यारा तारण लाए
गुरुअ जे संग में तरण आ सौलो, संग रहण प्यारा जरूरी आ
गुरु-----

२. गुरु मेटे मन जो अंधियारो, नाम जो सतगुरु डेई सहारो
नाम बिना ना थिये उजालो, नाम जपण प्यारा जरूरी आ
गुरु-----

३. प्रदीप प्यासी गुरु करण में, ना देर कर बियो नाम जपण में
सफर वडो आहे जिंदगीअ जो, वचन मनन प्यारा जरूरी आ
गुरु-----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “दृढ़ निश्चय और पक्केयकीन से आगे बढ़ो क्योंकि अकल के साथ मजबूत इरादे वाला ही अमल से मंज़िल तक पहुँचता है।”
- “पाँव नहीं दिल को साफ रखो तो ये पाँव जहाँ पड़ेंगे खुशहाली फैलाएंगे।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२१)

थलु: विश्वास हुजे ऐं कम न थिए ,
 पक जाण कमी कुछ तो में आ
 मतां समझीं गुरुन वटि का घट आ,
 पर तुंहिंजी कमी प्यारा तो वटि आ
 विश्वास-----

१. बार रूऊंदो रहे माउ सड न डे, ईअं थी न सघे (२)
 शिष्य सडु करे गुरु सडु न डे,
 पक जाण कमी सडु करण में आ
 विश्वास-----

२. शेवा खुब करे ऐं फल न मिले, ईअं थी न सघे (२)
 शेवा खुब करे ऐं फल न मिले,
 पक जाण कमी तुंहिंजी भावना में आ
 विश्वास-----

३. नाम जपे प्रल्हाद पार थी वियो
 मीरा बाई, अहिल्या जो उद्धार थी वियो
 नाम खुब जपे बेड़ो पार न थिए,
 पक जाण कमी नाम जपण में आ
 विश्वास-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२२)

तर्ज: दीदी तेरा देवर दीवाना
 थलु: सुखमनी सुखन जो भंडारो (२)
 पढंदो सो भागनवारो, बुधंदो नसीबन वारो

१. सुखमनी पढण सां थिए दूर मुश्किल
 गुरु तंहिंजे घर मां कढे सारी किलकिल
 मिटी वजे, मन जो मुंझारो
 पढंदो सो भागनवारो, बुधंदो सो-----
 सुखमनी-----

२. सुखमनी पढी जेको मन सां हंडाए
 गुरु तंहिंखे सभिनी दुखनि खां छडाए
 मिली वजे, मोक्ष द्वारो, पढंदो -----
 सुखमनी -----

३. दासी तूं भी दिल में दया भाव रखजाएं
 ख्यालनि खां खाली पंहिंजे मन खे रखजाएं
 वाहेगुरु थींदो तुंहिंजो सहारो
 पढंदो -----
 सुखमनी -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२३)

तर्जः मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा मिल गया होता
 थलुः गुरु अहिसान लख तुंहिंजा,
 भला से कींअं भुलायां मां
 लखे तुंहिंजयूं महेरबानियूं,
 तुंहिंजा नित गीत गायां मां
 गुरु -----

१. कुर्ब वारा करे सडड़ा, अची निंड मां जगायो तो
 विषय भोगन जे कीचड़ मां, अची बाबल बचायो तो
 कई कृपा आ तो जेडी, ऐडी लायक त नाहियां मां
 गुरु-----

२. हटाये मन खे विषयनि मां, प्रेम प्यालो पियाय्यो तो
 डेई निजनाम जो अमृत (२) मूअल दिल खे जिआय्यो तो
 मिठे तुंहिंजे नाम जी महिमा, वजी घर घर बुधायां मां
 गुरु-----

३. जींअं माता संभारे थी, सदा पंहिंजे त बालक खे
 जींअं गुरुदेव भी हरदम, सदा सारे थो सेवक खे
 कई रहिमत आ तो जेडी, ऐडी लायक त नाहियां मां
 गुरु-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२४)

तर्जः तेरा मेरा प्यार अमर
 थलुः बरसा सतगुरु सुख बरसा,
 आंगन आंगन सुख बरसा
 चुन चुन काटे नफरत के,
 प्यार अमन खे फुल खिला
 बरसा-----

१. तन का है कोई दुखी, मन का है कोई दुखी
 हे प्रभु दया करो, कुल जहां में हो सुखी
 सब के सुखों की तुम हो दवा
 आंगन आंगन -----

२. द्वेत द्वेष को मिटा, तुम सकल संसार से
 नाम का सिमरन करे, मिल के सारे प्यार में
 मानव से मानव हो ना जुदा,
 आंगन आंगन -----

३. झोलियाँ सुखों से तुम, चाहे सतगुरु भर भी दो
 पर मुझे मेरे गुरु, तुम सब शुक्र भी दो
 हर पल मांगूं यही दुआ
 आंगन आंगन -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(२५)

तर्ज: आ जा सनम मधुर चांदनी में हम
थलु: ऐ सतगुरु ऐ मेरे महेरबां,
तेरे अहिसान कैसे करूँ मैं बयां
मैं धरा तू आसमां
प्रेम नजर करके रहमो करम,
तुने पहोचाया मुझको कहाँ से कहाँ
बदला है मेरा जहाँ

१. दी है इतनी रहिमतेँ, जिसके मैं काबिल न था
ऐसी थी य जिंदगी, जिसका कोई साहिल न था
तू मिला तो रब मिला, रब मिला तो सब मिला
झूम उठी ये जिंदगी, जीने का सबब मिला
ऐ सतगुरु -----

२. जलते जग के धूप में, तेरी छाया मिल गई
रोते नैना हँस पड़े, दिल की कलियाँ खिल गई
खुद रहमो करम, साँस है इधर उधर
ना उतार पाऊँगा कर्ज तेरा उम्र भर
ऐ सतगुरु -----

३. दी है इतनी रहिमतेँ, झोली छोटी पड़ गई
ऐसी दया से मेरी, आंखे निची हो गई
भाग्य तू संवारता, पार तू उतारता
भक्त तेरा हर घड़ी, शुक्र ये गुजारता,
ऐ सतगुरु -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(२६)

थलु: मेरे हाथों की लकीरों का तमाशा मैं क्या जानू,
ना जानू -----
मानू मैं तो मानू साँई तुमको ही मानू
लाया ना मैं कोई नजराना, किस्सा अजीब है
मांगने को हाथ भी नहीं है, बंदा गरीब है
बंदा गरीब है ----- (३)

१. जिस रात की नहीं कोई सुबह, वो रात साँई मेरी जिंदगी
साँई जी वो रात साँई मेरी जिंदगी
जिस बात का ना हो कोई मतलब, वो बात साँई मेरी जिंदगी. साँई-
जीना ठोकरो में हर गरदिश की ये मेरा नसीब है,
माँगने -----

२. अपनों ने मुझे ठुकाराया मैं साँई तेरे दर पे आ गया
साँई तेरे दर पे आ गया
मैंने देखे हैं रंग दुनिया के, नजारा मुझे तेरा भा गया
मुझे मिल गया पालनहारा, ये मेरा नसीब है
माँगने -----

३. हर मोड़ पे है तुमने संभाला, साँई ने मुझे रोने न दिया
मुझे लोगों ने कहा मिट जाये, साँई ने कुछ होने ना दिया (२)

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

उसे आँधीयाँ मिटा ना सकेगी, जो साँई के करीब है
माँगने का हाथ -----

४. जो सिर ना झुका किसी के आगे, वो सिर तेरे दर पे झुक गया
साँईजी वो सिर तेरे दर पे झुक गया
जो काफला दर से चला था,
वो आके तेरे दर पे रूक गया, साँई जी --- (२)
सारी संगत ये दोहराये, ये मेरा हबीब है,
माँगने का हाथ -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “प्रभु अनेक रूपों में देख रहे हैं इसलिए सबकी सेवा करो।”
- “ईश्वर भक्ति और सतगुरु विश्वास को मजबूती से बनाए रखना ही श्रद्धा है।”
- “किसी की झूठी प्रशंसा, तारीफ न करो क्योंकि उससे पाप बढ़ता है और रूसवाई मिलती है।”
- “घर परिवार में प्यार व मोहब्बत बढ़ने से बरकत आती है, और मुसीबत मिट जाती है।”
- “प्रेम में ऐसा त्याग भरा है कि सब कुछ अपने आप छूट जाता है सो अपने आपको सतगुरु प्रेम से सरबोर करो।”
- “सदाचार पे चलने वाले उत्तम जीवन व लंबी उम्र के साथ शारीरिक व मानसिक पवित्रता पाते हैं।”
- “वचन का पालन यानी वादा - ए - वफा करो क्योंकि वचन पालना इज्जत और महानता बख्शती है।”
- “सत्य, शुद्ध व श्रद्धा के बिना आत्म ज्ञान व शक्ति ऐसे बह जाते हैं जैसे बहते पानी में खींची गयी लकीरें।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(२७)

तर्जु: हमें और जीने की चाहत न हाती
थलु: कयां प्रार्थना मां तो दर इहाई
सुमित डे सदाई, सुमित डे सदाई

१. सुबुह जो सवेल डिजाएं सुजागी
जपियां नाम तुंहिंजो, मां बणिजी बैरागी
अजाई वेल विजायां न वेही
सुमिते डे -----

२. हर श्वास में तुहिजो सिमरन कयां मां
गुरु ध्यान तुंहिंजो दिल में धारियां मां
भुलायां न तोखे गुरु अंत ताई
सुमित डे -----

३. मुश्किल अचे जेका
डिजाएं तूं सहारो
दुखन जे दरियाह में, बणजाएं किनारो
बेड़ी बणी तूं सतगुरु लगाई
सुमित डे -----

४. कयां मां सदाई, सभ सां भलाई
कडहिं दिल में आणियां न कंहिं लाइ मां बुराई
बुरे ख्यालनि खां तूं बाबल बचाइ
सुमित डे -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

(२८)

थलु: शुकर करां, गुरूजी त्वाड़ा शुकर करां

१. तेरा हरवेले दिन रात गुरूजी शुकर करां
मेरी बनी रही जी बात गुरूजी शुकर करां
मेरे बदल गये हालात गुरूजी शुकर करां
मेरी बन गई बिगड़ी बात गुरूजी शुकर करां
गुरूजी शुकर करां गुरूजी शुकर करां
शुकर करां (४)

२. मेरी सुन ली तू अरदास, गुरूजी शुकर करां
सरताजों के सरताज गुरूजी शुकर करां
कट गई अंधेरी रात गुरूजी शुकर करां
हुई अमृत की बरसात गुरूजी शुकर करां
गुरूजी शुकर करां (२)
शुकर करां (२)

३. प्यारा दिया परिवार गुरूजी शुकर करां
मेरा जीत लिया विश्वास गुरूजी शुकर करां (२)
मेरे अंग संग बस हो आप, गुरूजी शुकर करां (२)
जनमों की बुझ गई प्यास, गुरूजी शुकर करां
गुरूजी शुकर करां (२)
शुकर करां----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम

४. तेरे नाम हुई हर सांस, गुरूजी शुकर करां
तुने हर पल दिया मेरा साथ, गुरूजी शुकर करां (२)
खाली न गई दरख्वास गुरूजी शुकर करां (२)
सरकारें के सरकार गुरूजी शुकर करां
गुरूजी शुकर करां (२)

५. सत्संग करवाया आज, गुरूजी शुकर करां
गुरूजी घर आये आज, गुरूजी शुकर करां
जागे सोये हुए भाग, गुरूजी शुकर करां
जो खाये तेरा परसाद, कहे तेरा शुकर करां
गुरूजी शुकर करां-----

६. तेरा प्यारा लगे दरबार, गुरूजी शुकर करां
तुने इतने किये उपकार, गुरूजी शुकर करां
तुने धाम बुलाया आज, गुरूजी शुकर करां
तेरा दर आया मुझे रास, गुरूजी शुकर करां
गुरूजी शुकर करां-----

७. रोते को हसाया आज, गुरूजी शुकर करां
दिये प्यारे से लम्हा, गुरूजी शुकर करां
मिली सुखों की सौगात, गुरूजी शुकर करां
मेरी सुन ली तु अरदास, गुरूजी शुकर करां
गुरूजी शुकर करां-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(२९)

तर्जः जाने क्योँ लोग मोहब्बत
सलोकः छाजी चिंता छाजो गम तोखे, विश्व
संसार में कहिड़ो कम तोखे
थलुः जेको सोचे छडियो आ हुन, उहो ही थियणो आ
तोखे उनजी ही राजा में राजी रहिणो आ

१. वस कहिड़ो भला तुंहिजो हिन जीवन ते हलंदो
जेकी लिखियल आहे, उहो तोखे मिली रहंदो
तुंहिजो लिखियो तोखां सघंदो खसे न कोई
जेको लिखियो दातार आ, मिलंदो मिठा सो ई
जेसीं दाणो अथेई. तेसीं खाईदे, जेसीं तन आहे, तेसीं पाईदे
हिकडे डीहं आत्मा खे बि अमर थियणो आ
जेको सोचे-----

२. आयें हथें खाली, वेंदे हथें खाली
भली अर्श ते पियो टिड़ी, मगर उनजो आहीं सुवाली
मोहिताज उन जो आं, भल छा भी तूं भाएं
सोचियो अथेई कडहिं भला, उनखां सिवा छाहे
तूं मिट्टी जरड़ो, हू अलाए छाहे
उनजी लीला जी का खबर नाहे
बाझ घुरणी आ, असांखे, जेसीं जीअणो आ
जेको -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

३. हुन खे त करोड़ डिनाइ, मूंखे न डिनइ पाई
हिन चिंता सिवा पारस तोखे चिंता न आ काई
ईअं बी को सोचियो अर्थई, छा आ खणी वजणो
जीअं बोर आ चढंदो तीअं आहे चढी वजणो
नाम ईश्वर जो पंहिजे परवर जो, तोखे कम ईदो,
साणी सो थींदो
फक्त सिमरण जो समर ही खणी हलणो आ
जेकी सोचे -----

सच्चे सतराम ने कहा.....

- “छोटे - छोटे पापों व गुनाहों को कभी भी छोटा नहीं समझना चाहिए क्योंकि एक छोटा सुराख पूरी कश्ती को डुबो देता है।”
- “उपकार करने वाले का जवाब उपकार से देना और उसके प्रभु से क्षमा मांगना ही साधुता है।”
- “जैसे कांटों से दामन बचा के फूलों तक पहुँचा जाता है, वैसे अगर कुकर्म से बचकर सुकर्म अपनाएं तो जीवन सुगंधित हो जाए।”
- “सुरके की बोटल पर नहीं पर शहद की बूंद पर मक्खियां आती है, वैसेही कड़वी जबान वाले से नहीं पर मीठा बोलने वाले से सभी प्यार करते हैं।”
- “मोहताजों और गरीबों से महंगा सामान खरीदना और उन्हें सस्ता देना ही असल बलिदान है।”
- “किसी की गलती कोमाफ करना बहादुरी का काम है और दूसरों की गलती को भूल जाना खुशियों का खजाना देता है।”
- “किसी और को नहीं, अपने मन को जेर या काबू करनेवाले ही शक्तिवान और महान बनते हैं।”

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३०)

तर्जः आ लौटे के आ जा मेरे मीत-----
 थलुः मुंहिजे बचड़नि ते कर आसीस
 गुरू तोखे घर में घुराईदसि
 मुंते बाबा कर बख्शीस (२)
 गुरू तोखे घर में घुराईदसि

१. तुंहिजा ही बचड़, तुंहिजा ही आहिनि, मांबी आहियां तुंहिजी
 विघ्न पवे ना सतगुरू मुंहिजा, पारत करियां तोखे पंहिजी
 तुंहिजो भंडारो कराईदसि, गुरू तोखे घर में -----
 २. जोड़े जी जोड़ तू ही जोड़ी आ, तू ही संभालजाएं सतगुरू
 खिलंदे खुशियुनि मेंडिसां हमेशा, सतगुरू खपे तुंहिजी महेर
 तोते चादर चढ़ाईदसि, गुरू तोखे घर में घुराईदसि
 मुंहिजे -----
 ३. पेर पेर में राखो तूं थींदे, अंग अंग जो राखो
 कोसो वाह लगे ना कोई, दुश्मन ते रहे धाको
 तोते चंवर झुलाईसि, गुरू तोखे -----
 मुंहिजे -----
 ४. सुख सां बचड़नि जा कारज कजांए
 रहिजी अचे मुंहिजा सांई
 अगिते हाणे, पारत अथेई, दासीअ जी लज रखजांए
 तुंहिजे सत्संग कराईदसि, गुरू तोखे -----
 मुंहिजे -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३१)

थलुः सतगुरू मैं तेरी पतंग बाबा, मैं तेरी पतंग
 हवा विच उड़ती जावांगी (२)
 सांईया डोर हथ छड ना, मैं कटी जावांगी
 सतगुरू मैं तेरी -----

१. बड़ी मुश्किल दे नाल मिलिया, मैं नू तेरा द्वारा ये
 सांईया तेरा द्वारा ये (२)
 मैं नू इको तेरा आसरा, नहीं दूजा सहारा है
 सांईया दूजा सहारा है (२)

२. हूं तेरे ही भरोसे सांईया
 हवा विच उड़ती जावांगी (२)
 सांईया डोर हथों छडि ना मैं कटी जावांगी
 सतगुरू मैं तेरी -----

३. ऐनू चरणा कमलनालूं
 मैं नू दूर हटाये ना सांईया (२)
 इस झूठे जग के अंदर मेरा पेचा लाईना सांईया (२)
 जे कट गयी तो, सतगुरू फिर मैं लूटी जावांगी (२)
 सांईया डोर -----
 सतगुरू मैं तेरी -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३२)

तर्जः जिंदगी की ना टूटे लड़ी
थलुः नाम जपणो जे तोखे न हो, गुरू छा लाइ
पो मनड़ा कयइ
जीवन पंहिंजो जे ठहिणो न होय (२)
गुरू छा लाइ पो मनड़ा कयइ

१. वक्त तोखे न आहे इहो,
गुरू दर ते वजां ब घड़ियूं (२)
मथे टेकण जी फुर्सत न थई, मिठा रीस ते नाम वरतइ
हो ----- हो ---- भाग पंहिंजो जे ठहिणो न होय
गुरू छा लाइ -----

२. तुंहिंजे ही करे थियूं खजन
आडरियूं त गुरू जे मथां
सडे कीन को चयो हो तोखे
अची नाम वठ तूं मूंखां
गुरू वचन ते हलणो न होय,
गुरू छा लाइ -----

३. फरक तोमें न आयो आहे
अनंत शिष थियण खां भ पोइ
गुरू करण जी खबर न हुई
रूगो - रीस तेनाम वरतइ
नाम जपणो जो तोखे न हो, गुरू -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

(३३)

तर्जुः एक तेरा साथ, हम को दो जहां से प्यारा है
थलुः पूरा ध्यान लगा (२)
गुरूवर दौड़े दौड़े आयेंगे
मन की अखीयां खोल (२)
तुझको दर्शन वो करायेंगे
तुझे गले से लगायेंगे-----

१. है राम रमैया वो, है कृष्ण कन्हैया वो, वही मेरा ईश्वर है
निष्काम राहों पर चलना सिखाये जो, वही मेरा जगदीश है
प्रेम से पुकार (२) तेरे पास वो तब आयेंगे
तुझे-----

२. कृपा की छाया में बिठायेंगे तुझको, जहां तुम जाओगे
उनकी दया दृष्टी जब जब पड़े तुझपर भव से तर जाओगे
ऐसा है विश्वास, ऐसा है विश्वास मन में ज्योति वो जगायेंगे
तुझे-----

३. ऋषियों ने मुनियों ने, गुरू की महिमा का किया गुणगान है
गुरु के चरणों में झुकती सगल, सृष्टी झुके भगवान है
महिमा है अपार (२) सच की राह वो दिखायेंगे
तुझे-----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

तर्जः ऐ मालिक तेरे बंदे हम
थलुः मुंहिंजा मालिक तूं कर को रहम
मिलां तोसां अची हर जनम
तुंहिंजी महिमा करियां, तुंहिंजो ध्यान धरियां
जेसीं दम में आहे मुंहिंजो दम

१. अहिंदी किस्मत विधाता बणाए, हर युग में गुरुन सांमिलाए
गुरु मूखे वणे, मांगुरुनि खेवणां, अहिंदी रेखा हथनि में बणाए
थिए प्यार असांजो न कम, शल वधंदो रहे हर जनम
तुंहिंजी महिमा-----

२. मोक्ष मुक्ती न थो मां घुरां , प्रेम भक्ती तोखां थो घुरां
तुंहिंजो प्यार हुजे, दीदार हुजे, तोसां गडुगडुसदा पियो फिंरां
वधे तोड़े मुंहिंजो हर कदम, करे दुनिया केडो भी सितम
तुंहिंजी महिमा -----

३. रंग तुंहिंजे रतो मां रहां, जेको सतगुरु कराये करियां
 माण्हूं महिणा डियन, ताना तुनका हणानि,
 पर दरडो न तुंहिंजो छडियां
 अहिड़ी सतगुरु लगायो लगन, गायां तुंहिंजा सदाई भजन
 तुंहिंजी महिमा -----

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सवा सतराम

आरती

ॐ जय रहड़कीअ वारा

ओ बाबा जय रहड़कीअ वारा(२)

ओ बाबा जय डेवड़ीअ वारा(२)

दुःख हर्ता सुख डियो था (२)

बाबा डेवड़ीअ वारा, ॐ जय रहड़कीअ वारा

१) पूज्य पिता साईं खोताराम खे
निवड़ी नियाज़ कयूं, बाबा निवड़ी नियाज़ कयूं
जंहिं घर अहिड़ो लाल थियो पैदा (२)
तंहिंजी जय था चऊं, ॐ जय रहड़कीअ वारा

२) पूज्य पिता साईं सतरामदास जो
जंहिं बि दर्शन कयो, बाबा जंहिं बि दर्शन कयो
फलिया फुलिया से जग में (२)
जेको शरण पियो, ॐ जय रहड़कीअ वारा

३) साईं कंवरराम जी कुर्बानीअ जो
मिलणो नाहे मिसाल, बाबा मिलणो नाहे मिसाल
सिर भी कयाऊं सदके (२)
थिया लालनि जा लाल, ॐ जय रहड़कीअ वारा

४) साईं चंदीराम, बाबल भगवान दास
भाव सां भेट धरी, बाबा भाव सां भेट धरी (२)

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सवा सतराम

पीड़ी अमीरी बई हलाए
डेई विया डाति जरी, ॐ जय रहड़कीअ वारा

५) वडियुनि डेवड़ियुनि ते जलगांव वारे
जागी जोग कयो, बाबा जागी जोग कयो (२)
ज्योत जगाए जग में (२)
गोदड़ीअ वारो थियो, ॐ जय रहड़कीअ वारा

६) साईं कन्हैयालाल ते महेर कई आ
साईं सच्चे सतराम, बाबा साईं सच्चे सतराम
साईं विस्पत जा मेला मलाए, (२)
जपायो सच्चो सतराम
ॐ जय रहड़कीअ वारा

७) नव रातियूं जेके टिकिया नेम सां तिनि जा थिया कल्याण
बाबा तिनि जा थिया कल्याण,
आस वंदा जेके आसूं रखनि था, (२)
दोहणा थियो था दान
ॐ जय रहड़कीअ वारा

८) वास धूप ऐं ज्योत जगाए
आरती कयूं गडिजी, बाबा आरती कयूं गडिजी
बालक मण्डल ते महर कयो, बाबा लाज रखो सभजी,
ॐ जय रहड़कीअ वारा, बाबा जय रहड़कीअ वारा (२)
दुःख हर्ता सुख डियो था (२)
बाबा डेवड़ीअ वारा, ॐ जय रहड़कीअ वारा

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सवा सतराम

अरदास साहिब

ॐ श्री सतगुरु सतराम देवाय नमः

ॐ श्री सतगुरु सतराम देवाय नमः

ॐ श्री सतगुरु सतराम देवाय नमः

१) पूज पिता साहेब सतगुरु शहंशाह साईं खोताराम साहेब, पूज पिता साहेब सच्चा सतगुरु शहंशाह साईं सतराम दास साहेब, साईं दयालदास, साईं अमोलकदास, साईं मेहरदास साहेब, पूज अमर शहीद भगत साहेब, साईं कंवरराम साहेब, पूज लालनजे लाल साईं चंदीराम साहेब, पूज बाबल साईं भगवानदास साहेब, दुल्हा दरवेश सतगुरु साईं कन्हैयालाल साहेब, जिनके चरणों कमलों को ध्यान धरके बोल्यो सतराम सतगुरु॥

साची डेवड़ी साहेब जे दर्शन दीदार का ध्यान धर के बोल्यो – सतराम सतगुरु॥

२. हे मुंहिंजा पिता चार पहेर डींहं जा सुख सां गुज़ारिया अथव मुंहिंजा सच्चा मालिक, रात जा चार पहेर भी सुख सां व्यक्तीत कंदा। अठई पहेर सुख सां परदे में गुज़ारणा। नंग ढंग सभ तव्हां ते अथव। आयल आपदा खे टारियो। मुश्किल खे आसान कयो। पाप, ताप, दुख, दर्द कष्ट सभु नास कयो। सुख वरतायो। बचड़नि जी लाज रखो। देस – परदेस, डींहं – रात, वाट – घाट, पल – पल, घड़ी – घड़ी, जसां – तसां में रक्षा करनी। सतगुरु सच्चा पातशाह मुंहिंजा स्वामी

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

सवा सतराम

सतरामदास, पूरी कजो प्रेम सां पंहिंजे बचड़नि जी अरदास।

दुःख दर्द सब कजो नास। अर्ज थो गोविंद करे ॥ धन सतगुरु चवंदा हलो – सतराम सतगुरु॥

३) सतगुरु तूं रहमती असां ओहियूं गुनहगार पुर, आया आहियूं पांध ये सतगुरु तुंहिंजे दर, सच्चा सतराम घोट तूं अहिड़ी नज़र धरि जो ऐब न टिकेमि हिकड़ो। धन सतगुरु चवंदा हलो – सतराम सतगुरु॥

४) सतगुरु तूं न छडीं, जे जीऊं तुंहिंजे आसरे। सभई पारूं सूर जूंहिक लाहिजे मंझि लटेजि। सच्चा सतराम घोट हिक तूं न मुंहं मटेजि, जे मुल्क मटियो त घोरियो। धन सतगुरु चवंदा हलो – सतराम सतगुरु॥

५) आस वंदी संगत जी आई, बाबा सब जी आश पुजाए, तो वटि आहिनि भरियल भंडारा, खाली कीन मोटाए। निपुट्रनि खे डियो पुटड़ा बाबा, निर्धन कर धनवान, जेडी आस अंदर में मालिक पूरी कंदव तव्हां पाण॥ मेघों निमाणो अर्ज करेई थो, बाबल बख्श गुनाह, सभेई सवाली तो वटि आहिनि, सतगुरु खाली कीन मोटाए॥ धन सतगुरु चवंदा हलो – सतराम सतगुरु॥

६) इस वेले की अरदास, आरती साहेब की अरदास, अखंड धुनी साहिब की अरदास, सभिनी आयलन जी अरदास, सभिनी दुःखयुनि जा कारज कंदव रास। शहंशाह तव्हांजे दर ते, तव्हांजे दामन में, तव्हांजे चरणनि में, तव्हांजी शरण में असां बचड़नि जी वारंवार सदा नमस्कार। पौरी पैर गुरू चवंदा हलो सतराम सतगुरु॥

सचो सतराम सचो सतराम सचो सतराम

